चन्दामामा
मार्च १९६१
50
NP

Photo by P. R. Shinde

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

"न खायें तो रहा न जाये!"

प्रेषक:
ओमप्रकाश - अमृतसर

अनुपम चित्र

उसे प्यार की प्यास थी...
मां की तलाश।

इन का विवाहित जीवन सुखी था पर घर में
बच्चे की कमी सदा महसूस करते।

उन्हें सेवाकुंज में एक बेसहारा बच्ची गीता मिल
गई। आशा और अशोक ने उसे अपने ही
बच्चे की तरह पालना शुरू कर दिया।

गीता की ज़िन्दगी में यह बहार ज़्यादा दिन
तक न रह सकी। छोटी बच्ची ने बड़ी बहन
के कहकहे आंसुओं में बदल दिये।

गीता की ज़िन्दगी में अन्धेरा छा गया। रात
के अन्धेरे में वह घर छोड़कर वापिस
सेवा कुंज जा पहुँची।

प्यार की प्यास

गेवाकलर ✱ सिनेमास्कोप

फिर क्या हुआ... किसके प्यार की प्यास भड़की, किसके प्यार की प्यास बुझी—यह आप इस
बच्चे की आंसुओं और कहकहों भरी कहानी में देखेंगे।

मार्च १९६१

विषय - सूची

★

एक प्रति ५० नये पैसे

वार्षिक चन्दा रु. ६-००

बिनाका

का समय होता है।

सुबह और रात में बिनाका से ब्रश करते समय वे लड़ाई-झगड़ा, शैतानी सब भूल जाते है....क्यों की उन्हें बिनाका का फलों का सा मधुर स्वाद पसंद है और मृदु बिनाका से उन्हे अपने मसूढ़ों के जलने, छिलने का भय नहीं है।

यह बच्चों तथा कोमल मसूढ़े वालों के लिए आदर्श है।

सीबा का बनाया हुआ लाजवाब टूथपेस्ट

BINACA

मैं आपके चन्दामामा का ग्राहक हूँ। मुझे यह बेहद पसन्द है। इसकी कहानियाँ तो बहुत ही मनोरंजक हैं।

शमिन्द्रराय, अम्बाला केन्ट.

चन्दामामा चार साल से लगातार पढ़ता हूँ। चन्दामामा बच्चों के लिए बहुत ही सुन्दर पत्रिका है। कहानियाँ ऐसी अच्छी होती हैं, एकबार शुरू करने के बाद छोड़ने को जी ही नहीं चाहता। साथ में कहानियाँ शिक्षा देनेवाली भी हैं।

ज्ञानप्रकाश, रोहतक.

मैं बालपत्र "चन्दामामा" हर महीने खरीद कर पढ़ता हूँ। वास्तव में यह एक ऐसी पत्रिका है जो न केवल बच्चों के लिए ही उपयोगी है अपितु वयस्क भी इसे उतने ही चाव से पढ़ते हैं, जितने चाव से बच्चे। मुझे चन्दामामा में प्रकाशित होनेवाले धारावाहिक उपन्यास बहुत पसन्द हैं।

वास्तव में चन्दामामा भारत की समस्त पत्रिकाओं में से सर्वोत्तम है।

सुभाषचंद्र गोयर, नई देहली.

मैं आपका मासिक पत्र "चन्दामामा" नियमित रूप से पढ़ता हूँ। और उसकी प्रतिक्षा इतनी व्यग्रता से करता कि मैं वर्णन नहीं कर सकता।

अमरसिंह, हैद्राबाद.

यह हमारा नया स्तम्भ है। आप इसके लिए अपनी सम्मति भेज सकते हैं।

आप भी चाहेंगी
कि 'मेरे भी बाल
ऐसे सुंदर हों!'
मुझके ज़रा एक
नजर देखा। उसके सुंद
बालों की ओर आंखें बरबस
खिंच गयी—दिल में तमन्ना
जाग उठी कि मेरे बाल
भी ऐसे ही सुंदर होने
चाहिए। मनोहर
खुशबूवाला 'केशा' बालों
के पोषक तत्वों से
भरपूर है। इसे
इस्तेमाल करने से सुंदर
बाल उगते हैं। आप
के बालों पर मनोहर
बहार आ जाती है—
ऐसी बहार जिसकी
आप तमन्ना करती हैं।
आज ही अपने बालों
की रक्षा के लिए इस्तेमाल करें
सोमा के उत्पादकों
की एक और बढ़िया भेंट
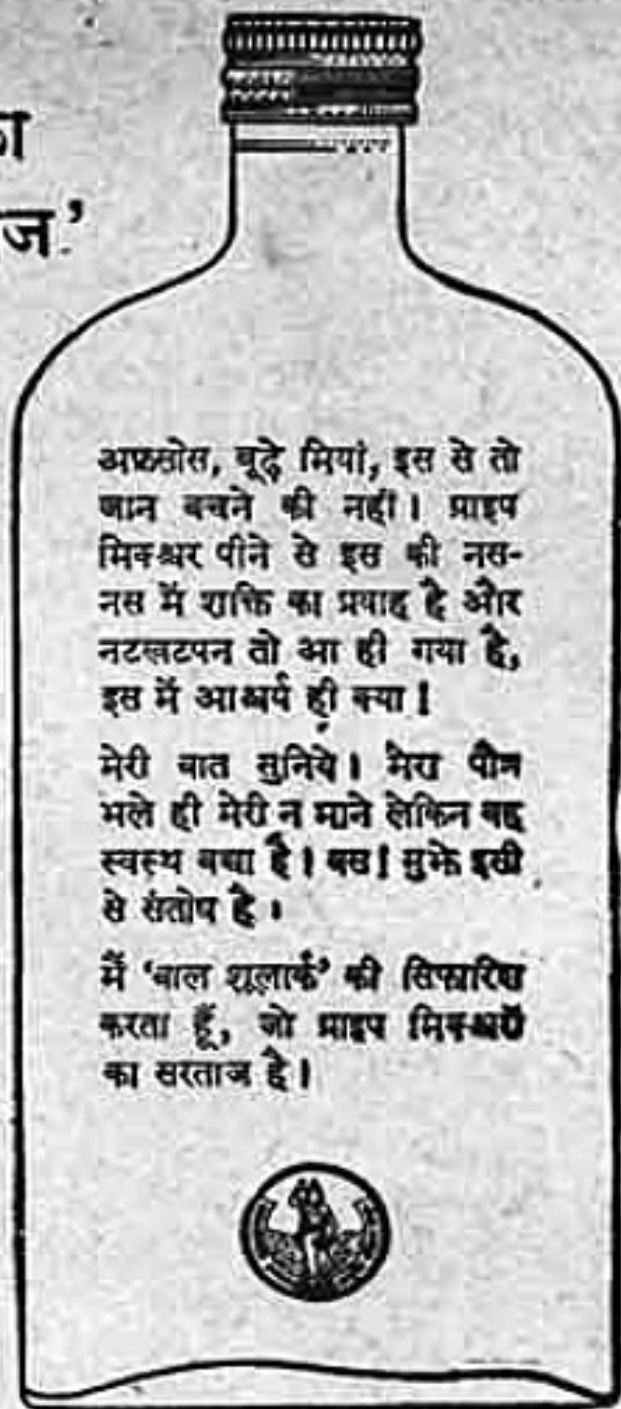
केशा

अब

अपना
मनचाहा स्वास्थ्यवर्धक
वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड

विटामिन युक्त

लीजिए

अब आप भारत का मनचाहा और स्वास्थ्यप्रद टॉनिक विटामिनयुक्त खरीद सकते हैं। वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड के प्रसिद्ध फार्मूले में स्फूर्तिदायक बहुमूल्य विटामिनों का समावेश किया गया है। यह बीमारी के बाद की कमज़ोरी को दूर कर शरीर में नयी ताकत और स्फूर्ति पैदा करता है। खून साफ़ करना, स्नायुओं और ग्रन्थियों में नया जीवन लाना और शरीर में बीमारी को रोकने की अद्भुत शक्ति पैदा करना यह सब वाटरबरीज़ विटामिन कम्पाउन्ड के विशेष गुण हैं।

वाटरबरीज़
विटामिन
कम्पाउन्ड

आपकी खुराक का पूरक।

लाल लेबलवाला क्रियोसोट तथा ग्वायकोलयुक्त वाटरबरीज़ कम्पाउन्ड हर जगह मिलता है जो सर्दी और खाँसी के लिए बेजोड़ है।

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम कई मास से संस्कृत के नाटकों का अनूदित कथा रूप दे रहे हैं। कालिदास के कई नाटक इस माला में प्रकाशित हुए हैं। इस मास भवभूति का नाटक "मालती-माधव" दे रहे हैं।

"चन्दामामा" में हम एक और स्तम्भ खोल रहे हैं—जो पाठकों का अपना होगा। इसका शीर्षक होगा "पाठकों के मत" आप अपना मत लिख भेजिये।

जब "चन्दामामा" के विषय में, आप अपनी सम्मति प्रकट करें—तो साथ कुछ और न दीजिये, जैसे प्रश्न या फोटो-परिचयोक्ति, इससे आपको सुभीता होगी और हमको भी।

वर्ष : १२ मार्च १९६१ अंक : ७

कुमण की उदारता

कुमण नाम का राजा कभी अपनी दानशीलता के लिए प्रसिद्ध था। चाहे कोई आकर माँगे, वह किसी को न न कहता। राजा के ये दान मन्त्रियों को कतई नापसन्द थे। इसलिए जैसे भी हो उन्होंने उसको पदच्युत करने का निश्चय किया।

कुमण राजा का एक छोटा भाई था। उसे बड़े भाई से ईर्ष्या थी। मन्त्रियों ने उसकी सहायता करके उससे विद्रोह करवाया। छोटा भाई विजयी हुआ और बड़े भाई को जंगलों में जाना पड़ा। वह स्वयं राजा हो गया।

कुमण के पास न पहिनने को कपड़ा था, न खाने को भोजन ही। फिर भी अगर कोई कुछ माँगता, जो कुछ पास होता दे देता। इस तरह वह अपनी उदारता की परम्परा बनाये हुआ था।

परन्तु मन्त्री जनता का हृदय न बदल सके। जनता अभी पुराने महाराजा को ही याद कर रही थी। नये राजा के प्रति उनमें कुछ भी आदर न था। यह देख मन्त्रियों ने कुमण महाराजा को मरवाना चाहा। यह घोषणा करवा दी कि जो कोई कुमण का सिर काटकर लायेगा, उसको लाख रुपये दिये जायेंगे।

इस सब के कुछ दिन बाद कुमण महाराजा के दर्शन करके उनका आदर पाने के लिए किसी और देश से एक कवि आया। जंगल में आ रहा था कि उसे एक पेड़ के नीचे कुमण बैठा दिखाई दिया। कवि ने राजा को पहिचान लिया। उसका अभिवादन करके उसने बताया कि वह किस काम पर आया था।

कुमण ने लज्जित होकर कहा—"महाकवि! मैं इस समय राजभ्रष्ट हूँ।

मेरे भाई ने ही मेरे विरुद्ध विद्रोह किया और मुझे जंगलों में भेज दिया। अब मैं आपको क्या दे सकता हूँ। फिर भी मैं आपको एक ऐसा उपाय बताता हूँ जिससे आपको रुपया मिल सके। मेरे भाई ने घोषणा की है कि जो कोई मेरा सिर काटकर ले जायेगा उसको लाख रुपये दिये जायेंगे। यह लीजिये मेरी तल्वार। मेरा सिर काट कर ले जाइये और ईनाम पाइये।"

ये बातें सुनकर कवि की आँखों से आँसुओं का प्रवाह बह चला। उसने कुमण से कहा—"महाराज! आप अपना सिर रखिये। मैं आपके भाई से तो लाख रुपये लूँगा ही, यदि सम्भव हुआ तो आपका राज्य भी आपको वापिस दिल्वाऊँगा।"

फिर उस कवि ने केले के पेड़ की जड़ को इस तरह काटा छाटा कि वह कुमण के सिर की तरह दिखाई दे। उस पर उसने ज़रूरी रंग भी लगाये। उसने उसको इस तरह बनाया ताकि सब को भ्रम हो कि वह कुमण का ही सिर था। उसे लेकर वह कुमण के भाई के पास गया।

"महाराज! मैं एक कवि हूँ। कुमण महाराजा कवियों का आदर किया करते थे। मैं चूँ कि बहुत गरीब हूँ, इसलिए उस महाराजा की सहायता से अपना दारिद्र्य दूर करने दूर देश से आया हूँ। मैंने सुना है कि कुमण महाराजा जंगलों में हैं और इस समय यहाँ कवियों का सत्कार नहीं हो रहा है। आपके भाई मुझे जंगलों में दिखाई दिये, उन्होंने बताया अगर मैं उनका सिर आपके पास ले आया तो आप मुझे लाख रुपये ईनाम में देंगे। दान कर्ण नाम यदि किसी के लिए सार्थक है, तो उन्हीं के लिए है। यह लीजिये, उनका सिर लाया हूँ। अगर आपने मुझे

मेरा ईनाम दे दिया तो मैं अपने रास्ते चला जाऊँगा।" कहकर कवि ने गठरी खोलकर अपना बनाया हुआ सिर दिखाया।

छोटा भाई तब तक जो मन्त्री कहते वह सुनता आया था। अब जो उसने अपने भाई का सिर देखा और उसकी दानशीलता पर सोचा और कवि की बातें सुनीं, तो वह बड़ा दुःखी हुआ और वह जोर जोर से रोने लगा।

"राजा, अब दुख करने से क्या लाभ! अब रोने से भाई तो वापिस नहीं आयेंगे!" कवि ने कहा।

मैं यह राज्य नहीं चाहता। मैं मन्त्रियों के हाथ में कठपुतली हूँ। मैं जनता के शाप तो सुन ही रहा हूँ और अब भाई को भी खो बैठा हूँ।" भाई ने कहा।

"अगर आपके भाई को पुनर्जीवित कर दिया गया, तो क्या आप उनको राज्य वापिस दे देंगे?" कवि ने कहा।

"ज़रूर दे दूँगा। अगर आप कर सकें, तो हमारे भाई को पुनर्जीवित कीजिये।" छोटा भाई कवि के पैरों पर पड़ गया।

"तो मेरे साथ वन में चलिये। मैं आपके भाई को पुनर्जीवित कर दूँगा।" कहकर कवि, कुमण के भाई को साथ लेकर कुमण जहाँ रह रहा था, वहाँ ले गया।

कुमण को जीवित देख छोटे भाई में आनन्द और पश्चात्ताप उमड़ आये। उसने भाई के पैरों पर पड़ कर क्षमा माँगी। उसे यह समझ में नहीं आया कि वह भाई जो मर गया था, कैसे जीवित था।

कवि ने जो किया था, वह बता दिया। इसके बाद कुमण, उसका भाई और कवि राजधानी वापिस आये। कुमण फिर राजा हो गया। जिन मन्त्रियों ने यह सब किया था, उनको दण्ड दिया गया। कवि का आदर-सत्कार किया गया। सब सुखी थे।

स्यमंतकमणि

द्वितीय अध्याय

सूर्यदेव की किरण-प्रभा से
दिशा-दिशा हो उठी प्रकाशित,
स्वर्णरश्मिमय रथ पर देखा
सत्राजित ने उन्हें विराजित।

दर्शन पाकर सूर्यदेव का
पुलक उठा उसका यों गात,
पहली वर्षा से हरियाते
मुरझाये तरु के ज्यों पात।

भक्तिभाव से गद्-गद होकर
उसने उनको किया प्रणाम—
"हुआ धन्य मैं दर्शन पाकर
हे भुवनभास्कर, ज्योतिर्धाम!"

सूर्यदेव ने कहा विहँसकर—
"पुत्र, तुम्हारी निष्ठा धन्य,
साधक अचल तुम्हारे जैसा
हुआ न शायद कोई अन्य।

हूँ प्रसन्न मैं, तुमको दूँगा
मनचाहे वर का अब दान,
लो यह मणि भी दिव्य अनोखा
देगा जो तुमको धन-मान।"

सत्राजित ने कहा—"देव, अब
नहीं कामना कोई शेष,
मणि ही यह काफी है, मुझपर
रहे आपकी कृपा अशेष।"

सूर्यदेव तब गये वहाँ ही
जहाँ न होती रात कभी,
सत्राजित भी मणि धारणकर
लौटा अपने नगर तभी।

शोभित था उसकी ग्रीवा में
ज्योतिपुंज-सा मणि अभिराम,
पुरवासी सब उसकी शोभा
देख रहे थे उर निज थाम।

"यात्रिक"

प्रभापूर्ण गलियों को करता
गया कृष्ण के जब वह पास,
नमस्कार कर उन्हें दिखाया
मणि का अनुपम उज्ज्वल हास।

कहा कृष्ण से उसने फिर यह—
"मणि का क्या मैं करूँ बखान,
मनों स्वर्ण यह देता प्रति दिन
मिलता मनचाहा वरदान।"

उसपर बोले कृष्ण शान्त हो—
"साधारण यह चीज़ नहीं है,
रक्खो तुम ही इसे पास में
ऐसा सचमुच ठीक नहीं है।

उग्रसेन राजा हम सबके
वे मणि रखने के अधिकारी,
राजकोष यदि भरा रहे तो
प्रजा रहेगी सदा सुखारी।"

लेकिन सत्राजित को तिल भी
नहीं कृष्ण की बातें भायीं,
मौन खड़ा वह रहा देर तक
फिर उसको घर की सुध आयी।

अपने घर आ शुभ मुहूर्त में
किया दिव्य मणि का जब पूजन,
बड़ा ढेर इक सोने का तब
गया वहीं पर लग तत्क्षण।

मणि को उसने मंजूषे में
रख दिया बंद कर शीघ्र,
लेकिन कुछ ही देर बाद फिर
हुई चाह लखने की तीव्र।

बार-बार वह उसे देखता
कर देता फिर उसको बंद,
चिंता होती कभी बहुत ही
कभी बहुत बढ़ता आनन्द।

सोच रहा था—'राजा को मैं
क्योंकर दूँ यह मणि अनमोल?'
किंतु गूँज उठते कानों में
तभी कृष्ण के सहसा बोल।

नाना चिंताओं से उसका
हो उठता आशंकित तब मन—
'बात कृष्ण की काटूँगा तो
क्या न करेगा वह नटखटपन?

मणि को पाकर खुश हूँ जितना
उतनी ही भय से आकुलता,
भावी की आशंका उतनी
जितनी है सुख की आतुरता।

छिपा सकूँ इस मणि को ऐसा
संभव नहीं यहाँ है,
और अगर जगविदित रहे तो
खतरा सदा यहाँ है।

है सत्यभामा एकलौती
कन्या मेरी सब से प्यारी,
खटक रहा मुझको कब से यह
उसे चाहता कृष्णमुरारी।

सतधन्वु से लेकिन मैं अब तो
उसका ब्याह रचाऊँगा,
मणि उसको ही दे चिन्ता से
छुटकारा मैं पाऊँगा।'

यह निश्चय कर सत्राजित ने
अनुज प्रसेन को पास बुला,
कहा—"बंधु, यह देखो कैसा
अनुपम मणि है मुझे मिला!

तुम ही इसको रखो आज से
सदा सुरक्षित अपने पास,
लूँगा फिर मैं माँग बाद को
जभी जरूरत होगी खास।

सोना जो दे मणि यह प्रतिदिन
उसे मुझे तुम देते रहना,
शत्रु बहुत हैं यहाँ हमारे
उन सब से तुम बचकर रहना।"

महिमामय उस मणि को फिर तो
किया प्रसेन ने धारण ज्यों ही,
बहुत खुशी के मारे उसका
पुलक उठा तन-मन भी त्यों ही!

[१४]

[चित्रसेन ने अपने वचन के अनुसार उग्राक्ष को अपनी पहिली सन्तान न देकर, दूसरों के लड़के को दिया। उग्राक्ष यह धोखा ताड़ गया। आखिर चित्रसेन ने अपना ही लड़का उग्राक्ष को सौंप दिया। उग्राक्ष ने इस लड़के का नाम उग्रदत्त रखा और दो बच्चों के साथ वह उसको किले में पालने लगा। बाद में—]

चित्रसेन का लड़का, जो लाड़ प्यार से राज महलों में पला था उग्रदत्त नाम से, उग्राक्ष के किले में बड़ा होने लगा। और जो बच्चे उसके साथ खेलने कूदने के लिए चुरा कर लाये गये थे, उनका नाम रुद्र और आरुद्र रखा गया। ये तीनों और राक्षस के बच्चों के साथ पल रहे थे।

दिन, सप्ताह, मास और वर्ष बीते जा रहे थे। देखते देखते पन्द्रह वर्ष बीत गये।

उग्राक्ष ने अपने राक्षसों को हिंसा करने से रोका। उनको सभ्य बनाने के लिए उसने जंगल कटवाकर उनसे खेती करवानी शुरु की।

परन्तु खेतों में हल चलाने के लिए और पैदावार को घर पहुँचाने के लिए मामूली बैल भैंस काम में न आये। जो मनुष्यों के लिए इतने उपयोगी थे इन बलशालियों के लिए बिल्कुल बेकार से थे। इसलिए

अब उग्रदत्त और उसके साथी रुद्र और आरुद्र बीस साल के नौजवान थे, वे तल्वार चलाने में, घुड़सवारी और भाला चलाने में, और धनुष और बाण के उपयोग में बड़े प्रवीण हो गये।

उन्होंने एक दिन उग्राक्ष के मुख शेर का चमड़ा पहिनने वाले, उन अग्निद्वीप वासियों के बारे में भी सुना, जिन्होंने कपिलपुर में इतना उपद्रव मचाया था।

"अब भी ये शेर का चमड़ा पहिननेवाले भयंकर पक्षियों पर सवार होकर रात में कभी कभी हमारे राज्य में दिखाई देते हैं। गत पन्द्रह वर्षों में उन्होंने कोई खास अराजकता नहीं पैदा की है। मगर उनका सरदार करवीर और कोई नागवर्मा हमारे हाथ से निकल भागे हैं।" उग्राक्ष ने बताया।

उग्राक्ष की ये बातें, उग्रदत्त के मन में चिपट-सी गईं। जब तक यह नहीं मालूम कर लिया जाता कि द्रोही नागवर्मा और उसका अनुयायी करवीर अग्निद्वीप पहुँचे हैं कि नहीं, तब तक राज्य के लिये कल्याण नहीं है। अगर आज भी अग्निद्वीप के लोग कहीं कहीं दिखाई देते हैं, तो इसका मतलब है कि वे दुष्ट अभी तक कपिलपुर

वे हाथी, ऊँठो, गेंड़ों को हलों में जोतकर, गाड़ियों में लगाकर, उनसे खेती का काम लेने लगे।

जंगल के गांवों में रहनेवालों के लिए यह बड़े आश्चर्य की बात थी। उन्हें यह देख बड़ा सन्तोष हुआ कि जो नर मांस खाते थे, ग्रामों पर आक्रमण करके पशु आदि उठा ले जाते थे, यों खेती कर रहे थे।

इन सब कारणों से कपिलपुर जिस पर चित्रसेन राज्य कर रहा था, सुख सम्पदा से परिपूरित हो गया। किसी को कोई कष्ट न था।

राज्य को पूरी तरह नहीं भूल पाये हैं। और किसी मौके की ताक में हैं।

उग्रदत्त ने अपने मित्र रुद्र और आरूढ़ से विचार विमर्ष करके एक योजना बनाई। वह योजना यह थी कि रात के समय जो अग्निद्वीप के वासी जहाँ तहाँ दिखाई देते थे, उनमें से एक को जीवित पकड़ना यदि एक इस तरह मिल गया, तो उसके द्वारा अग्निद्वीप की गति विधि के बारे में जाना जा सकता था। यह भी पता लगाया जा सकता था कि नागवर्मा और करवीर जीवित थे कि नहीं।

यदि अग्निद्वीप के शेर का चमड़ा पहिननेवाले को पकड़ना था, तो जंगलों में रहनेवाले लोगों और राक्षसों की सहायता की आवश्यकता थी। अगर कुछ ईनाम की घोषणा की गई तो वे रात दिन चौकन्ने रहेंगे और शेर का चमड़ा पहिननेवालों को पकड़ कर रहेंगे।

उग्रदत्त ने इस बारे में उग्राक्ष से भी बातचीत की। उग्राक्ष इसके लिए तुरत मान गया।

उसने कहा—"ढिंढोरा पिटवा दो कि जो कोई शेर का चमड़ा पहिननेवाले को

पकड़कर लायेगा, उसको एक लाख सोने के सिक्के दिये जायेंगे। क्या जाता है! हमारे किले की कोठरियों में सोना पड़ा पड़ा जो सड़ रहा है।"

उग्रदत्त ने जंगलों में, गावों में और उन घाटियों में जहाँ राक्षस रहा करते थे, यह घोषणा करवा दी।

इसके बाद अग्निद्वीप के शेर का चमड़ा पहिननेवालों के बारे में रोज उग्राक्ष के किले में खबरें पहुँचा करतीं। शेर का चमड़ा पहिननेवाले, भयंकर पक्षियों पर सवार हो कर कई देशों में दिखाई दे रहे

थे। परन्तु वे कहीं भी नीचे नहीं उतर रहे थे।

इसतरह की खबरों से उग्रदत्त निराश-सा हो गया। उसे यह समझ में न आया कि क्यों अराजकता पैदा करने के लिए शेर का चमड़ा पहिननेवाले अग्निद्वीप के लोग, यूं छुपे छुपे आ रहे थे और क्या मालूम कर रहे थे। क्या ये लोग कहीं जंगलों में उतर रहे हैं, जहाँ वे और लोगों द्वारा देखे न जा सकें!

इस सन्देह के निवारण के लिए यह आवश्यक था कि रात के समय, जंगलों में एक ऊँचे प्रदेश पर वह स्वयं पहरा दे। उसके यह निश्चय करते ही रुद्र और आरुद्र ने भी उसके साथ जाने के लिए उत्साह दिखाया।

एक दिन सूर्योदय के समय तीनों किला छोड़कर घोड़ों पर सवार होकर निकले। उन्होंने उन ग्रामों को छोड़ दिया जहाँ लोग रहा करते थे। निर्जन वनों में वे आधी रात तक चलते रहे। पर कुछ न मालूम हुआ।

तीनों बुरी तरह थक चुके थे। उनके घोड़े थक गये थे। सवेरे तक उन्होंने एक देवदार वृक्ष के नीचे विश्राम करने का निर्णय किया। तीनों घोड़ों से उतर पड़े और उनको अलग अलग पेड़ों से बाँध दिया। जब वे देवदार के पेड़ के नीचे सोने के लिए जैसे तैसे आये तो उन्होंने देखा कि वृक्ष का उपरला भाग रोशनी से खूब चमचमा रहा था।

सब से पहिले यह उग्रदत्त ने देखा। उसने आश्चर्य में कहा—"भयंकर पक्षी, उस पर शेर का चमड़ा पहिननेवाला जो बैठा है, उसके हाथ में कोई चीज़ है, जिसमें से रोशनी आ रही है।"

रुद्र और आरुद्र ने भी सिर उठाकर देखा। तब तक भयंकर पक्षी पश्चिम की ओर बहुत दूर चले गये थे। उन्होंने भी देखा कि जिस ओर पक्षी जा रहे थे, उस तरफ़ से प्रकाश आ रहा था।

"मैं चोटी की टहनी पर चढ़कर देखूँगा कि हम किस प्रदेश में हैं।" रुद्र ने कहा।

उग्रदत्त और आरुद्र ने भी सिर हिलाकर इसका समर्थन किया।

रुद्र देवदार पेड़ पर जल्दी जल्दी चढ़ा, फिर हाँफ़ता, हाँफ़ता नीचे उतर आया।

उग्रदत्त के सवाल करने से पहिले रुद्र ने पश्चिम की ओर हाथ दिखाते हुए कहा—"यहीं कहीं, किसी का एक बड़ा किला है। किले में कहीं रोशनी नहीं है। ऐसा भी नहीं लगता कि कोई बुर्जों पर पहरा दे रहा है।

रुद्र की बातों में घबराहट देखकर उग्रदत्त ने कहा, तो क्या तुम्हारा मतलब है कि शेर का चमड़ा पहिननेवाले कहीं उसी किले में उतर गये हैं!

"यह बात निश्चित रूप से कहना कठिन है। मेरा कहने का यही मतलब है कि किले के लोग बिल्कुल असावधान हैं, अभी अभी जो शेर का चमड़ा पहिननेवाला गया है, यदि वह किले में उतरा है या किले के आसपास तो इसकी सूचना देनेवाला भी कहीं कोई नहीं है। ऐसा मालूम होता है।" रुद्र ने कहा।

जो सन्देह रुद्र के मन में उठे थे, वे ही सन्देह उग्रदत्त के मन में भी उठे। यह कौन-सा कपिलपुर का सामन्त है, जो अपने किले के बारे में इतना लापरवाह है, उसने थोड़ी देर सोचा। सवेरा होने से पहिले इस प्रश्न का उत्तर नहीं

मिल सकता था, सवेरे उठते ही, उसे पहिले पहल, इस सामन्त राजा को शेर का चमड़ा पहिननेवालों के खतरे के बारे में कहना था।

इसके थोड़ी देर बाद, दिन भर के सफ़र से थके तो थे ही, पेड़ के नीचे वे घोड़े बांधकर सो गये।

सूर्योदय होते ही पक्षियों का कलरव सुनकर उनके घोड़े हिन हिनाने लगे। अपने खुर जमीन पर मारने लगे। यह सुन, रुद्र आरुद्र और उग्रदत्त भी एकायक उठे।

सारे जंगल में तब प्रकाश हो चुका था। बड़े-बड़े पेड़ उनसे लटकी लम्बी लम्बी जड़ें उनके सहारे एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदनेवाले बन्दर, रंग-बिरंगे पक्षी और उनका चहचहाना सब बड़ा सुन्दर लग रहा था।

"यह इलाका हमारे इलाके से तो बहुत सुन्दर है।" उग्रदत्त ने कहा।

"इसीलिए ही किसी सामन्त ने यहाँ किला बनवाया है। शेर का चमड़ा पहिननेवालों को भी यहाँ ऐसी जगह मिली है, जहाँ वे बिना किसी को दिखाई दिये आसानी से छुप सकते हैं।" रुद्र ने कहा।

शेर का चमड़ा पहिननेवालों के बारे में सुनते ही उग्रदत्त उठ खड़ा हुआ। उसके साथ उसके दोनों साथी भी उठ खड़े हुए। "किले की ओर जा रहे हो न? घोड़ा लाऊँ क्या?" उन्होंने पूछा।

"घोड़े क्यों? किला कितनी दूर होगा?" उग्रदत्त ने पूछा।

"मेरा ख्याल है कि एक चौथाई कोस से भी कम होगा। फिर मैंने अन्धेरे में पेड़ों के बीच में से देखा था। यह भी

सम्भव है कि इससे अधिक दूर हो।" रुद्र ने कहा।

"कितनी ही दूर हो, हमें क्या! चलो, घोड़ों पर चढ़ें।" आरुद्र ने कहा।

वे तीनों पेड़ों के पास जाकर घोड़ों की रस्सियाँ खोल रहे थे कि उनको किसी का आर्तनाद सुनाई दिया। उसे सुनते ही तीनों साथी निश्चेष्ट से हो गये। यह आर्तनाद किसी स्त्री का था।

"लगता है कोई स्त्री किसी आफत में फँस गई है।" रुद्र ने कहा।

"तो जल्दी आओ, भागो।" कहता, उग्रदत्त ने तलवार म्यान से निकाली और उस ओर भाग चला, जिस ओर से आर्तनाद आ रहा था।

तीनों साथी कुछ दूर गये थे कि पेड़ों के पीछे कुछ मनुष्यों की आकृतियाँ दिखाई दीं। थोड़ी दूर जाने पर उन्होंने देखा कि रेशमी कपड़े पहिने, गहनों से सज़ी, एक युवती को शेर का चमड़ा पहिननेवाले पकड़ने का प्रयत्न कर रहे थे। वह और उसकी दासियाँ उनसे छूटकर भागने की कोशिश करती हुई चिल्ला रही थीं— "बचाओ, बचाओ।"

"डरो मत। हम आ रहे हैं।" उग्रदत्त, रुद्र और आरुद्र चिल्लाये। तुरत पेड़ों पर से शेर का चमड़े पहिननेवाले कुछ उनके बीच कूदे। उग्रदत्त, रुद्र और आरुद्र इस आकस्मिक आक्रमण से स्तब्ध से चकित-से खड़े रहे। उन्होंने उनको निहत्था कर दिया। रस्सियों से उनके हाथ और पैर बाँध दिये और भयंकर पक्षियों की ओर उनको खींचकर ले जाने लगे।

(अभी है)

पद्मावती नगर में देवरात और भूरिवसु नाम के दो बाल्य मित्र रहा करते थे। वे साथ पढ़ा करते। "अगर हम में से एक का लड़का हुआ और दूसरे की लड़की तो दोनों का विवाह करके हम समधी बनेंगे।" दोनों ने सोचा। उसके बाद देवरात विदर्भ के राजा के यहाँ मन्त्री बना और भूरिवसु पद्मावती के राजा का मन्त्री नियुक्त हुआ। देवरात के माधव नाम का लड़का और भूरिवसु के माल्ती नाम की लड़की हुई। देवरात, बचपन के निश्चय को न भूला। पर उसने सोचा कि उनका जबर्दस्ती विवाह कर देने से अच्छा था कि वे एक दूसरे को देखें, आपस में प्रेम करें और इसके लिए आवश्यक सुविधायें की जायें इसलिए उसने अपने लड़के माधव को तर्क विद्या का अभ्यास करने के बहाने पद्मावती नगर भेजा। माधव के साथ उसका साथी मकरन्द और सेवक कलहँस भी गया।

माधव पद्मावती नगर में मन्त्री के घर के सामने से आया जाया करता। एक बार उसको मन्त्री के घर की दूसरी मँजिल पर माल्ती दिखाई दी। जब दोनों ने एक दूसरे को देखा तो उनके मन में प्रेम अंकुरित हुआ।

माल्ती की मदयन्तिका नाम की सहेली थी। मदयन्तिका का भाई, जिसका नाम नन्दन था, राजा का विश्वासपात्र मित्र था। मदयन्तिका को देखते ही, माधव का मित्र मकरन्द उसे चाहने लगा।

पद्मावती नगर में ही कामन्दकी नाम की एक योगिनी थी। माल्ती-माधव ने आपस में समधी होने की प्रतिज्ञा उसी के

इन्दु भटनागर

सामने की थी। यही नहीं कामन्दकी मालती की संरक्षिका भी रहती आई थी। इसलिए कामन्दकी भी माधव और मालती का प्रेम बढ़ाना चाहती थी, ताकि यथा समय उनका विवाह हो सके।

परन्तु कुछ ऐसी बात हुई, जो उसकी इच्छा के अनुकूल न थी। राजा का विश्वासपात्र मित्र नन्दन मालती से विवाह करना चाहता था। उसने इस बारे में राजा से निवेदन भी किया। राजा ने अपने मन्त्री से कहा—"तुम अपनी लड़की मालती का नन्दन से विवाह करो।"

नन्दन उम्र में ही केवल बड़ा न था, वह बदसूरत भी था। भूरिवसु उसको अपना दामाद न बनाना चाहता था। फिर भी उसने राजा की सलाह का विरोध न किया—"प्रभु की कन्यायें प्रभुकी इच्छा का पालन न करेंगी तो क्या करेंगी?"

यह बात योगिनी कामन्दकी को भी मालूम हुई। उसने अपनी शिष्या बुद्धिरक्षिता से कहा—"जैसे भी हो कोई ऐसा उपाय करो, जिससे मालती माधव का प्रेम निरन्तर बढ़ता जाये।"

इस बीच मालती ने माधव का चित्र बनाया। मालती की लवंगिका नाम की एक सहेली थी। उस चित्र को माधव के पास पहुँचाने के लिए उसने कामन्दकी की एक परिचारिका को दिया। माधव का सेवक कलहँस इस परिचारिका से प्रेम कर रहा था।

एक बार मन्मथोत्सव हुआ। माधव मकरन्द उद्यान में आया। वहाँ वह एक हार श्रृंगार के पेड़ के नीचे बैठ गया और गिरे हुए हार श्रृंगार के फूलों से एक माला बनाने लगा। उससे पहिले ही सहेलियों के साथ मालती कामदेवालय गई थी और

तब वहाँ से वापिस आती आती वहाँ पहुँची। उसको देखकर माधव कुछ शर्माया और फूलों को टेढ़ा मेढ़ा करके गूँथने लगा, माला गूँथकर उसने गले में डाल ली। इतने में माल्ती के लिए हाथी आया और माल्ती उस पर सवार हो चली गई।

परन्तु माल्ती की सहेली लवंगिका वहीं रही और यों दिखाने लगी, जैसे फूल तोड़ रही हो। उसने माधवी के पास जाकर कहा—"आपके गले में हार शृंगार की जो माला है, वह बहुत सुन्दर है। हमारी माल्ती को ऐसी मालायें बहुत पसन्द हैं।" माधव ने अपने गले की माला निकालकर लवंगिका को दे दी।

लवंगिका के चले जाने के बाद मकरन्द माधव को खोजता हुआ उद्यान में आया। माधव ने अपने प्रेम के बारे में अपने मित्र से कहा। वह इस सन्देह में था कि माल्ती उससे प्रेम कर रही थी कि नहीं। इतने में सेवक कलहँस ने एक चित्र लाकर अपने मालिक को दिया। यह माल्ती का बनाया हुआ माधव का चित्र था।

चित्र देखने के बाद माधव के मन में यह पक्का हो गया कि माल्ती उससे प्रेम कर रही थी। मकरन्द की प्रेरणा पर उसने अपने चित्र के बगल में माल्ती का चित्र खींचा। उसने उसके नीचे एक श्लोक लिखा, उसका अर्थ था—जो सुख उसको माल्ती को देखने से मिलता था, किसी और चीज़ से न मिलता था। ठीक तभी कलहँस की प्रेमिका आकर चित्र ले गई और उसे ले जाकर वह लवंगिका को दे आई।

माधव की बनाई हुई माला और तस्वीर माल्ती के पास पहुँच गई। उन्हें देख माल्ती को माधव पर और प्रेम होने लगा।

परन्तु योगिनी कामन्दकी ने आकर बताया कि राजा की यह आज्ञा थी कि माल्ती का विवाह उम्र में बड़े नन्दन से हो। माल्ती शोक सागर में गोते लगाने लगी। "विवाह के बारे में राजकन्याओं के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वे माँ-बाप की आज्ञाओं का पालन करें। वे जिनसे चाहें गान्धर्व विवाह कर सकती हैं।" यह सलाह देकर कामन्दकी चली गई।

योगिनी कामन्दकी तो हर तरह से यह प्रयत्न कर रही थी कि माल्ती और माधव का विवाह हो। कामन्दकी ने एक दिन शिवालय में पेड़ों के झुरमुट में माधव को खड़ा किया। माल्ती शिवालय में से आई। उसने उससे माधव के प्रति उसके प्रेम के बारे में बातचीत की।

माल्ती की बातें सुनकर, माधव फूला न समा रहा था कि इतने में दूर से शोर सुनाई दिया। माल्ती की सहेली और नन्दन की बहिन शेर के कारण आफ़त में थी। माधव पेड़ों के झुरमुट से निकलकर जिस तरफ़ शेर आ रहा था उस तरफ़ भागा। परन्तु उस तरफ़ से मकरन्द आ रहा था। वह शेर से भिड़ पड़ा। उसको मारकर स्वयं मूर्छित हो गया। उसको घायल और उसका खून बहता देख माधव भी मूर्छित हो गया।

मदयन्तिका, मकरन्द के विषय में चिन्तित हो उठी क्योंकि उसने उसकी प्राण रक्षा की थी। परन्तु योगिनी के उसके मुँह पर पानी छिड़कते ही वह होश में आ गया। माल्ती ने जब उसका माथा रगड़ा तो माधव ने भी आँखें खोलीं।

इतने में मदयन्तिका के पास एक सेवक ने आकर कहा—"मालकिन! सुनता हूँ कि आपके भाई और माल्ती के विवाह

की बातें चल रही हैं। आपको तुरत बुलाया गया है।" मदयन्तिका यह जानकर बड़ी खुश हुई कि उसकी सहेली उसकी भाभी बनने जा रही थी।

माधव यह सुन हताश हो गया। योगिनी ने उसको आश्वासन दिया और माल्ती को वह अपने साथ ले गई। परन्तु माधव का धीरज न बँधा। "कुछ भी हो माल्ती मुझे न मिलेगी। मेरा जन्म व्यर्थ है। अब बस मुझे श्मशान में पिशाचों के लिए नरमाँस बेचते बेचते जीवन बिताना होगा।"

वह सचमुच श्मशान में फिरने लगा। उस श्मशान के पास कराल शक्ति का मन्दिर था। उस मन्दिर में अघोरघंट नामक कापालिक अपने कपाल कुण्डल नामक शिष्या के साथ उपासना कर रहा था। अपनी शक्ति के लिए एक सुन्दर कन्या को बलि करने के लिए उसने अपनी शिष्या को भेजा। वह मन्त्र-शक्ति के बल से माल्ती को लाई। उस समय माल्ती अपने घर में अकेली सो रही थी।

अघोरघंट ने माल्ती को बध्य चिन्हों से अलंकृत किया और देवी की पूजा करने लगा। यह जान कि उसकी मृत्यु समीप थी, माल्ती ने अपनी माँ, योगिनी कामन्दकी और अपनी सहेली लवंगिका को जोर से पुकारा। माधव तब श्मशान में घूम रहा था। उसको माल्ती की आवाज़ सुनाई दी। वह आलय की ओर भागा भागा गया।

उस समय अघोरघंट गँड़ासा लेकर माल्ती का गला काटनेवाला था। वह माधव को देखकर चिल्लाई—"बचाओ" वह उससे जोर से चिपक गई।

माधव ने अघोरघंट के हाथ से गँड़ासा छीन लिया और उसको मार दिया।
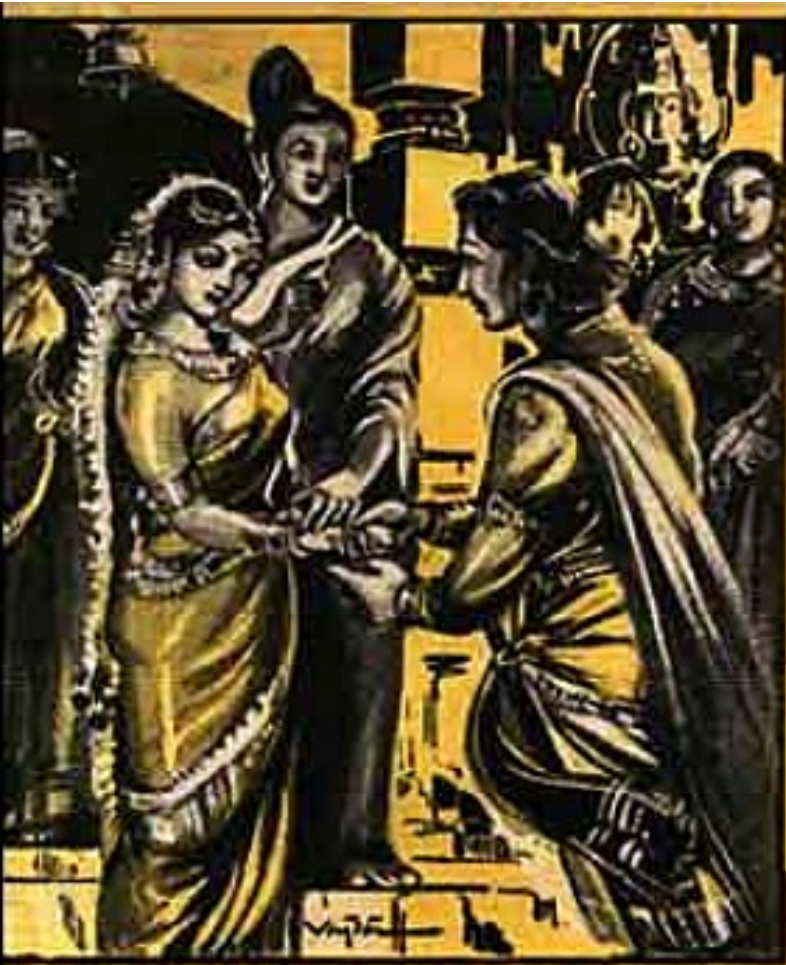
पहिले ग्रामदेवता की पूजा करवाकर लाती हूँ। उसने उससे पहिले ही माधव, मकरन्द को ग्राम देवता के मन्दिर में भेज दिया था और कहा था कि वे मन्दिर के अन्तर भाग में छुपे रहें। मालती और लवंगिका को लेकर योगिनी आई। मालती को दुल्हिन बनाने के लिए राजा ने जो वस्त्र, आभूषण आदि भेजे थे, वे भी मन्दिर भेजे गये।

योगिनी ने मन्दिर में माधव को मालती का कन्यादान किया। "तुम दोनों पेड़ों के पीछे-पीछे हमारे विहार के उद्यान में चले जाओ। वहाँ तुम्हारे विवाह की सब व्यवस्था करदी गई है। मकरन्द और मदयन्तिका भी वहीं आयेंगे।" फिर उसने मकरन्द को वस्त्र-आभूषण पहिनाये, जो राजा ने भेजे थे। उसको दुल्हिन बनाया लवंगिका को साथ लेकर, वह भूरिवसु के घर गई।

मालती के वेष में मकरन्द के साथ नन्दन का विवाह हो गया। योगिनी ने बहुत यत्न से भेद न बाहर होने दिया। नन्दन का विवाह होते ही "दुल्हिन" के साथ अपने घर गया। उस दिन नन्दन ने

इतने में मालती को खोजते खोजते कुछ लोग आये। उनके साथ मालती सुरक्षित घर चली गई।

कपालकुण्डला ने प्रतिज्ञा की कि वह अवश्य माधव से बदला लेकर रहेगी, क्योंकि उसने उसके गुरु की हत्या की थी। वह अपनी मन्त्रशक्ति के कारण बचकर भाग गई।

उधर, राजा के महल में नन्दन को दुल्हा बनाया गया। बरात दुल्हिन के घर आनेवाली थी। योगिनी ने मालती की माँ से कहा—"लड़की को दुल्हिन बनाने से

शयन कक्ष में "दुल्हिन" से खेल खिलवाड़ करना चाहा, तो मकरन्द ने जिसने माल्ती का वेष धारण कर रखा था, उसको एक तरफ़ हटा दिया। नन्दन यह सोचकर— "छी, यह छुटपन से ही बड़ी शरारती है" वहाँ से चला गया।

सब सो रहे थे। उस समय योगिनी की शिष्या बुद्धिरक्षिता और माल्ती की सहेली लवंगिका, मदयन्तिका को नींद से उठाकर ले गईं। उसे मालूम हो गया कि जिसने नन्दन से विवाह किया था, वह माल्ती नहीं, उसका प्रेमी मकरन्द ही था। फिर वे चारों मिलकर, योगिनी के विहार के पासवाले उद्यान में गईं।

परन्तु रास्ते में उनको राजसैनिक मिले। वे सन्देह में मकरन्द को पकड़कर ले गये। बुद्धिरक्षिता, मदयन्तिका, लवंगिका अभी हतप्रभ-सी थीं कि माधव का सेवक कलहंस उस तरफ़ आया और उन्हें माल्ती माधव की जगह ले गया।

यह सुनते ही माधव, अपने मित्र की रक्षा करने के लिए निकल पड़ा। उसके जाने के कुछ देर बाद, माल्ती को अकेला पा कपालकुण्डला उसको ले श्रीशैल के मार्ग पर निकल गई। वह तो गुरु की हत्या का बदला लेने के लिए मौके की ताक में थी, वह मौका अब उसे मिला। मदयन्तिका वगैरह उसके खोजती खोजती चिन्तित थीं।

इस बीच मकरन्द उन सैनिकों से भयंकर मुक्का-मुकी करने लगा, जिन्होंने उसे पकड़ा था। जल्दी ही माधव उसकी ओर से लड़ने लगा। राजा, जिसने मकरन्द पर यह अपराध आरोपित किया था कि उसने नन्दन का विवाह भग्न किया था अपने महल से उन दोनों युवकों को अपने सैनिकों से वीरों की तरह लड़ता देख बड़ा खुश

हुआ। उनको अपने पास बुलाने के लिए अपने सैनिकों को भेजा।

माधव और मकरन्द ने राजा से अपने वंश और गोत्र आदि के बारे में कहा। उसका गौरव पाकर वे यह सब अपनी प्रियतमाओं को बताने के लिए विहार के उद्यान में गये। वहाँ मदयन्तिका तो थी, पर मालती न थी।

माधव, कामन्दकी के पास गया। मालती वहाँ न थी। माधव तो मतिभ्रष्ट सा हो गया। वह मालती को खोजता वन में निकल पड़ा। हर पशु से पूछता—"क्या तुम्हें मालती दिखाई दी है?" मकरन्द होने को तो उनके साथ था। पर वह उसको ढाढ़स न बँधा पाया था। मित्र की यह दुस्थिति देखकर मकरन्द ने किसी पहाड़ की चोटी से कूदकर आत्महत्या भी कर लेनी चाही।

सौभाग्यवश कपालकुण्डला को सौदामिनी नाम की एक योगिनी दिखाई दी। यह सौदामिनी कामन्दिका की शिष्या थी। बहुत शक्ति सम्पन्न थी। उसने कपालकुण्डल को हराया। मालती को श्रीशैल में ही सुरक्षित रखा। उसके गले का हारशृंगार का हार लेकर वह माधव की तलाश में निकली। मकरन्द आत्महत्या करने को उद्यत था कि वह भगवान की तरह वहाँ पहुँची और उसको मालती की कुशल वार्ता दी। फिर उसने एक जगह मालती और माधव का मिलाप भी कराया।

इन सब बातों के मालूम हो जाने के बाद राजा ने भी मालती और माधव के विवाह का समर्थन किया। उसी तरह उसने मकरन्द और मदयन्तिका के विवाह के लिए भी अपनी सम्मति दी। देवरात और भूरिवस भी जैसा कि उन्होंने छुटपन में सोचा था, आपस में समधी हो गये।

भूतों का घंटा

किसी ज़माने में चीन दो भाई रहा करते थे। वे यद्यपि एक ही माँ के बेटे थे, पर उनकी चेष्टाओं में ज़मीन आसमान का भेद था। बड़ा भाई बड़ा बुरा था और छोटा बड़ा नेक।

पिता के गुज़रते ही बड़े भाई ने सारा धन हथिया लिया और उसको बड़े चढ़े सूद पर उधार देकर वह धनी हो गया। छोटा भाई, भाई के किसी कार्य पर भी आपत्ति न करता। ग्रामवासियों की कई तरह से मदद किया करता। हमेशा मेहनत करता और दूसरों की मदद से अपना गुज़ारा करता।

एक दिन भाई को बेहंगी में चाशनी के घड़े किसी और गाँव में ले जाने पड़े। रास्ता पहाड़ों में से जाता था। क्योंकि उससे पहिले ही बारिश हुई थी, इसलिए रास्ता बड़ा फिसल रहा था। छोटा भाई, बेहंगी लेकर पहाड़ पर चढ़ रहा था कि उसका पैर फिसल गया। वह घड़ों के साथ खड्ड में लुढ़क गया। सारी चाशनी उसके शरीर पर जम गई।

उसके खड्ड में से उठने से पहिले उस तरफ़ भूत आये। वे चिल्लाये—"अरे, कितना बड़ा शक्कर का खिलौना है।" कुछ भूतों ने झट उस खिलौने को खाना चाहा। परन्तु उतने बड़े खिलौने को एक साथ खा सकना सम्भव न था। इसलिए भूत मिलकर छोटे भाई को अपनी गुफ़ा में ले गये और उसे एक पत्थर पर लिटा दिया। वे फिर शक्कर के खिलौने को चारों ओर से घेरकर, शक्कर की परतें निकाल निकालकर खाने लगे।

इतने में सींगोंवाले एक भूत ने कहा—"अब काफ़ी है। अगर ज्यादह शक्कर

हरिभक्त

खा ली तो भोजन नहीं रुचेगा। खाना खाकर हमें खेलने के लिए जाना है। हमारी घंटी भी साथ लाओ।"

छोटा भाई तब तक न हिला डुला। बिल्कुल शकर के खिलौने की तरह पड़ा रहा। वह जानता था कि वे जान गये वह मनुष्य था, भूत उसकी बोटी बोटी नोंच नोंच कर खा लेंगे।

सींगोंवाले भूत के घंटा बजाते ही तरह तरह की खाने की चीज़ें आ गईं—जैसे किसी ने जादू किया हो। छोटे भाई के मुख से भी लार टपकने लगी उसे बुरी तरह भूख सताने लगी। भूतों ने वे सब चीज़ें बड़े सन्तोषपूर्वक खायीं, घंटे को एक जगह सुरक्षित रखकर, उछलते कूदते खेलने चले गये। जब गुफ़ा में और कोई न रहा, तो छोटा भाई पत्थर पर से उठा। घंटे को उसकी जगह से उठाया। उसे कुड़ते में छुपाकर, जितनी तेज़ वह भाग सकता था, उतनी तेज़ घर की ओर भागा।

उसके बाद छोटे भाई की भोजन की समस्या हल हो गई। जब कभी वह चाहता, तो घंटी बजाता और तरह तरह की चीज़ें खाने को मिल जातीं।

जब बड़े भाई को छोटे भाई की इस सौभाग्य की खबर मिली, तो वह ईर्ष्या से जलने लगा। यह सोच कि जो कुछ भाई ने किया था, यदि उसने भी किया, तो उसका भाग्य भी खिल उठेगा, वह भी चाशनी की बेहंगी लेकर पहाड़ के रास्ते निकल पड़ा। इस बार न कीचड़ था, न फिसलन ही। इसलिए बड़ा भाई अपने आप जान-बूझकर खड्ड में गिर पड़ा और सारे शरीर पर उसने चाशनी पोतली।

थोड़ी देर बाद भूत उस तरफ़ आये। बड़े भाई को देखकर उन्होंने कहा—"जो शकर का आदमी भाग गया था, वह यही है। अपनी गुफ़ा में इसको ले जाकर जो कुछ करना है वह करेंगे।"

ये बातें सुन बड़ा भाई यह सोच बड़ा खुश हुआ कि उसका भाग्य खिल उठा था। उसे भूत अपनी गुफ़ा में उठाकर ले गये।

सींगोंवाले भूत ने कहा—"पिछली बार यह शकर का आदमी हमारा घंटा चुरा ले गया था। इसलिए इस बार इसको ज़रा गरम करके खायेंगे।"

भूतों ने बड़े भाई को एक बड़े खाली बर्तन में रखा, उसमें पानी रखा और उसके

नीचे आग जला दी। ज्यों ज्यों पानी गरम होता गया, त्यों त्यों बड़े भाई की तपन भी बढ़ती गई। आखिर वह तपन न सह सका। बड़े बर्तन में से कूदकर वह गुफ़ा से बाहर भागने लगा। पर वह अभी बहुत दूर न गया था, कि भूतों ने उसे पकड़ लिया।

सींगोंवाले भूत ने बाकी भूतों से कहा—"नहीं मालूम कि यह फिर कभी मिलेगा कि नहीं इसलिए इसको ऐसी सजा देकर भेजेंगे, ताकि इसे हमेशा वह याद रहे।"

इसके बाद भूत एक एक करके सामने आये और बड़े भाई की नाक एक एक फ़ुट खींचते गये। बड़े भाई की नाक सात फीट बड़ी हो गई। इसके बाद भूतों ने उसको गुफ़ा में से बाहर फेंक दिया।

जान बची लाखों पाये, सोच, बड़ा भाई अपनी नाक लपेटकर, हाथ में पकड़कर रोता रोता घर पहुँचा।

उसकी पत्नी घर में इस प्रतीक्षा में थी कि उसका पति भूतों के यहाँ से कोई महिमावाली चीज़ चुराकर लायेगा। पति की आवाज़ सुनते ही दरवाजा खोलकर बाहर आई। बड़ा भाई दर्द के मारे चिल्लाया—"तुम मेरी नाक पर खड़ी हुई हो, हटो।"

"यह भी क्या बात! मैं आपकी नाक पर कैसे खड़ी होऊँगी।" कहते हुए उसने पति की ओर ध्यान से देखा और हैरान रह गई।

बड़े भाई ने पत्नी को, जो कुछ गुज़रा था बताया। उसने सब सुना और निश्वास छोड़ते हुए कहा—"जो कुछ भूतों ने किया है, उसका निवारण वे ही कर सकते हैं। फिर भी मैं जाकर तुम्हारे भाई की सलाह माँगती हूँ।" उसकी पत्नी ने कहा।

जब भाभी उसके पास आई तो छोटा भाई हल लेकर खेत जानेवाला था। वह विचित्र आदमी था। वह पहिले ही जान चुका था कि जो घंटा वह लाया था, वह खाने की चीज़ों के सिवाय, और चीज़ें भी वह दे सकता था फिर भी बिना काम के वह बेकार की ज़िन्दगी नहीं बिताना चाहता था। उस घंटे की सहायता से उसने खेती के साधन जमा कर लिये और फिर उसको सुरक्षित सन्दूक में रख दिया और मेहनत करके आजीविका करने लगा।

"क्यों भाभी, कैसे आना हुआ?" छोटे भाई ने पूछा।

उसने रोते रोते बताया कैसे भूतों ने उसके बड़े भाई को सज़ा दी थी। छोटे भाई ने सब सुनकर कहा—"मैं फिर एक बार भूतों की गुफ़ा में जाकर मालूम करूँगा कि भाई की नाक ठीक करने का कोई रास्ता है कि नहीं।"

जब उस दिन भूतों के भोजन का समय हुआ तो छोटा भाई उस गुफ़ा में गया और उनकी खेलने की चीज़ें ध्यान से देखने लगा।

बातों बातों में एक छोटे भूत ने पूछा—"न मालूम उस शकर के आदमी की नाक क्या हो गई होगी ?"

"अगर उसमें अक्ल है तो उसको ठीक करने का साधन भी उसके पास है। घंटे पर एक एक चोट करके यदि वह कहेगा—"कम हो, कम हो" तो उसकी नाक थोड़ी थोड़ी करके कम होती जायेगी।" सींगोंवाले भूत ने कहा।

यह सुनने के बाद छोटा भाई वहाँ न रुका, वह सीधे घर भाग गया। सन्दूक में से घंटी निकालकर वह भाई के घर गया।

"ऊ ऊ....अपने भाई की नाक को जल्दी जल्दी ठीक कर दो।" उसकी भाभी ने उससे कहा।

भाई ने घंटे पर एक चोट की। भाई के नाक की ओर देखकर कहा—"कम हो, कम हो।" बड़े भाई की नाक अंगुल कम हो गई। उसने फिर घंटे पर चोट करके कहा—"कम हो, कम हो।" वह फिर तीन अंगुल कम हो गई।

जब पन्द्रह मिनट खतम हुए तो भाई की नाक चार फीट ही रह गई थी। परन्तु उसकी भाभी को यह पन्द्रह मिनट ही युग की तरह लगे। उसे लगा क्योंकि देवर अक्लमन्द न था, इसलिए वह देरी कर रहा था।

वह देरी न बर्दाश्त कर सकी। उसके हाथ से घंटी लेकर उसे पीट पीटकर कहने लगी—"कम हो, कम हो।" उसने घंटे पर इतनी चोट की कि उसके दो टुकड़े हो गये। और तब तक उसके पति की नाक कम ही न हुई, बल्कि असली नाक भी उड़ गई। वह हमेशा के लिए नकटा हो गया।

तोते की बात

एक गाँव में एक बुढ़िया थी। उसके पास थोड़ी बहुत ज़मीन-जायदाद भी थी। सिवाय एक नातिन के उसके और कोई न था। बुढ़िया ने उसको बड़ी सख्ती से पाला। उसे नियम-नियन्त्रण में रखा। उस लड़की के लिए अपनी उम्र की लड़कियों से खेलना मना था। उनका उसके घर आना मना था। बुढ़िया को डर था कि कहीं औरों की सोहबत में उसकी नातिन बुरी आदतें न सीख जायें।

नातिन के लिए घर जेल-सा था। घर में नानी और एक तोते के सिवाय कोई न था। जब और बच्चे किल्कारियाँ भरते खेलते कूदते, तो उसको अपनी नानी पर बड़ा गुस्सा आता। क्योंकि वह बुढ़िया से बहुत डरती थी, इसलिए उसके सामने वह भीगी बिल्ली बनी रहती। जब बुढ़िया न होती तो कोसती—"बुढ़िया मर जाये, तो अच्छा हो।" यह वह ज़ोर से कहती।

सुन-सुनकर तोते को भी ये बातें याद हो गईं। एक बार तोते ने, जब वह बुढ़िया सुन रही थी कहा—"बुढ़िया मर जाये, तो अच्छा हो।"

बुढ़िया यह सुन चकित रह गई। इस तोते को, जो दिन-भर घर में बन्द रहता है, ऐसी गन्दी बातें कैसे आईं। पर उसे अपनी नातिन पर सन्देह न हुआ। जो लड़की इतनी चुप रहती थी—भला ऐसी क्यों कहेगी!

एक दिन बुढ़िया से कुछ कहने के लिए पास से घर की एक बुढ़िया आई। जब दोनों बात कर रही थीं, तोते ने झट कहा—"बुढ़िया मर जाये तो अच्छा हो।" यह सुनकर वह बुढ़िया गुस्से में तिलमिला

जैनेन्द्र

उठी। बात पूरी कहे बगैर ही वह अपने घर चली गई। बुढ़िया को ऐसा लगा, जैसे किसी ने उसका गला ही काट दिया हो।

बुढ़िया ने सोचा कुछ भी हो, तोते का यह कहना छुड़वाना होगा। पास ही एक ब्राह्मण रहा करता था। उसके घर भी एक तोता था। इसलिए तोतों के बारे में वह खूब जानता था।

बुढ़िया ने ब्राह्मण के घर जाकर बताया—"हमारा तोता गन्दी बातें बक रहा है। अगर कोई घर आता है, तो मुझे डर लगा रहता है। उसे कुछ अच्छी बातें सिखा कर ठीक रास्ते पर लाइये।"

ब्राह्मण ने कहा—"यह तो कोई बड़ी बात नहीं है। हमारा तोता बड़ी अच्छी बातें करता है। उसके मुख से कभी कोई गन्दी बात नहीं निकलती। अगर आप चाहें, तो मेरे तोते को अपने तोते के पिंजरे में दो-चार दिन रख देखिये। उससे आपका तोता भी दो चार अच्छी बातें सीख जायेगा।"

"अच्छा भाई, ज़रा इतनी मदद तो करो ही।" बुढ़िया ने कहा।

इसमें कौन-सी बड़ी बात है।" कहते हुए ब्राह्मण ने अपना तोता बुढ़िया को दिया। उसने उसे ले जाकर अपने तोते के पिंजरे में रखा। यह करने के बाद उसको ऐसा लगा, जैसे कोई बड़ा बोझ हट गया हो।

पर इतने में घर का तोता जोर से चिल्लाया—"बुढ़िया मर जाये, तो अच्छा हो।" तुरत ब्राह्मण के तोते ने बिना झिझके कहा—"तथास्तु।" बुढ़िया को बड़ा गुस्सा आया। उसने पिंजरा खोलकर, दोनों तोतों को छोड़ दिया और कहा—"जाओ, मरो।"

तीन दूल्हे

विक्रमार्क ने हठ न छोड़ा। फिर वह पेड़ के पास गया। उस पर से शव उतारकर कन्धे पर डाल चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, तुम से बहुत कहा, पर तुम हठ छोड़ते नहीं मालूम होते। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, इसलिए मैं एक कहानी सुनाता हूँ।" उसने यों कहानी शुरु की।

एक समय में उज्जयिनी नगर में पुण्यसेन राजा राज्य करता था। उसके यहाँ एक ब्राह्मण मंत्री था। उसका नाम हरिस्वामी था। यह हरिस्वामी सज्जन तो था ही, शासन कार्य में भी समर्थ था।

हरिस्वामी का देवस्वामी नाम का एक लड़का था। एक लड़की भी थी उसका नाम सोमप्रभा था। देवस्वामी पिता के योग्य लड़का था। वह भी बड़ा बुद्धिमान था और सोमप्रभा तो अप्सरा-सी सुन्दर थी।

बेताल कथाएँ

सोमप्रभा जब सयानी हुई तो माँ-बाप उसके विवाह के बारे में सोचने लगे। वह किसी ऐसे वैसे से विवाह न करना चाहती थी। जब तक कोई महा शूर या महा ज्ञानी या वैज्ञानिक न मिले तब तक मेरा विवाह न किया जाय—यह उसने अपनी माँ से कहा। यही बात उसने अपने भाई और पिता को भी कहलाई। वे भी उसकी यह शर्त मान गये।

इतने में दक्षिण देश के किसी राजा ने उज्जयिनी पर आक्रमण किया। पुण्यसेन महाराजा ने उस राजा से सन्धि करनी चाही और इस कार्य के लिए उसने हरिस्वामी को दूत बनाकर भेजा। हरिस्वामी दक्षिण देश गया और जो काम उसे सौंपा गया था उसे पूरा करके वापिस आया।

उस समय एक ब्राह्मण युवक ने हरिस्वामी के पास आकर कहा—"मैंने सुना है कि आपकी लड़की बहुत सुन्दर है। उसका मेरे साथ विवाह कीजिए।"

हरिस्वामी ने कहा—"बेटा, जो कोई मेरी लड़की से शादी करेगा, उसको या तो महा शूर होना होगा, नहीं तो महा ज्ञानी या महा वैज्ञानिक होना होगा। तुम किस श्रेणी में आते हो!"

"मैं वैज्ञानिक हूँ।" युवक ने कहा।

"देखें, तुम्हारा विज्ञान क्या है!"

उस युवक ने अपने विज्ञान से एक विमान तैयार कर रखा था। उसने हरिस्वामी को उस विमान में चढ़ाया और आकाश मार्ग से उसको सब लोकों में घुमाया।

"वाह, तुम अवश्य हमारी लड़की के योग्य वर हो। एक सप्ताह बाद उज्जयिनी आओ। उस दिन विवाह का मुहूर्त भी अच्छा है। तब मैं अपनी लड़की का तुम से विवाह कर दूँगा।

इसी समय उज्जयिनी में एक और ब्राह्मण युवक ने हरिस्वामी के लड़के देवस्वामी से आकर कहा—"क्या तुम मेरे साथ अपनी बहिन की शादी करोगे?"

देवस्वामी ने उससे कहा—"जब तक कोई महा ज्ञानी या महा शूर या महा वैज्ञानिक नहीं मिल जाता मेरी बहिन किसी से शादी न करेगी।"

"मैं सब शस्त्रों में निपुण हूँ।" यह कहकर वह युवक अपना चातुर्य देवस्वामी को दिखाने लगा। देवस्वामी ने सन्तुष्ट होकर उससे कहा—"एक सप्ताह बाद
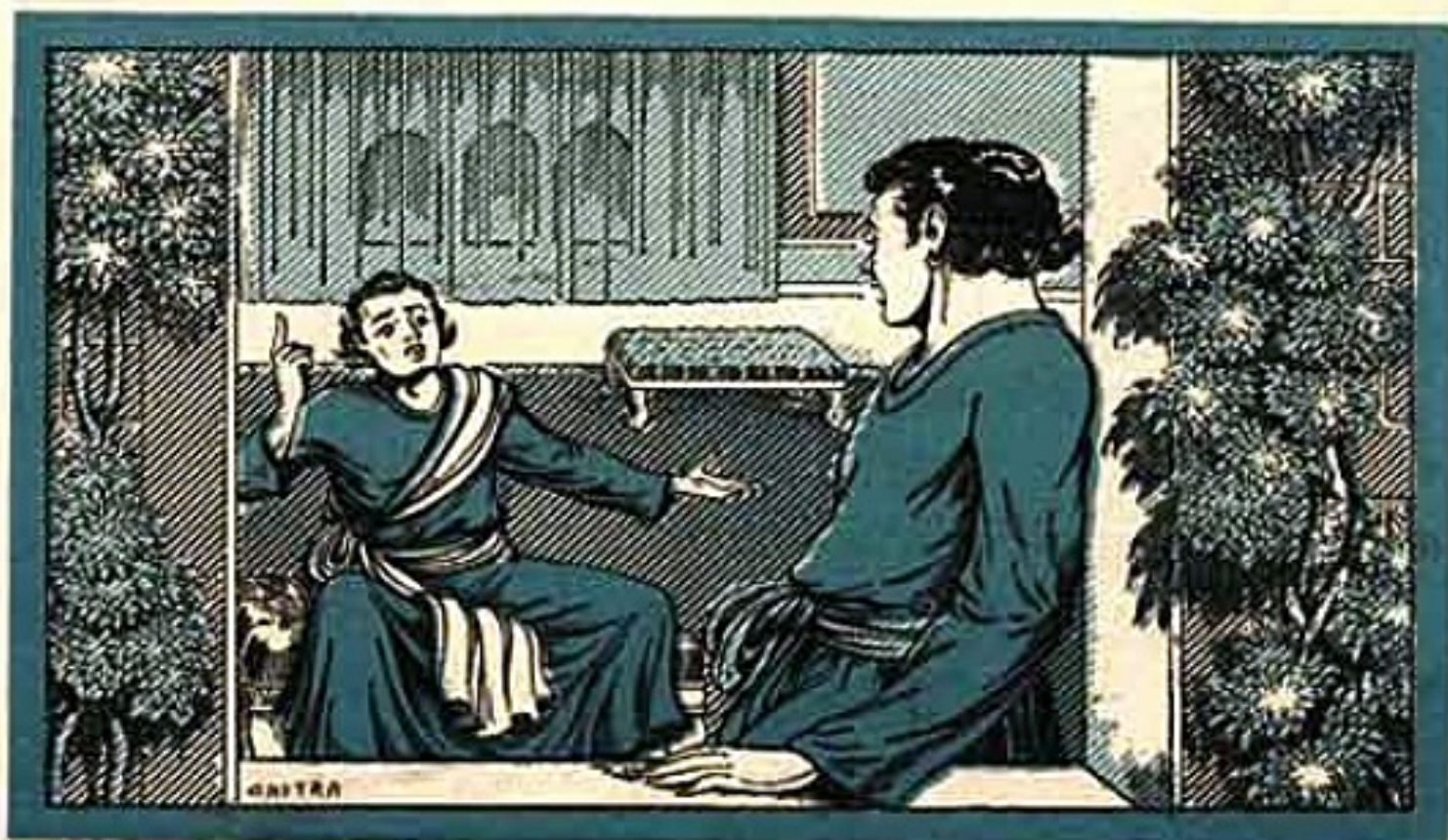
एक अच्छा मुहूर्त है। यदि तुम उस दिन हमारे घर आये तो मैं तुम्हारा विवाह अपनी बहिन से कर दूँगा।"

उसी दिन हरिस्वामी की पत्नी के पास एक और ब्राह्मण ने आकर कहा—"आप अपनी लड़की का मेरे साथ विवाह कीजिए।"

उसने भी उस युवक से अपनी लड़की की शर्त के बारे में कहा। "बेटा, क्या तुम महाशूर हो, या महाज्ञानी, या वैज्ञानिक?"

"मैं ज्ञानी हूँ। इस क्षण कहाँ क्या क्या हो रहा है, मैं जान सकता हूँ।" युवक ने कहा। यह निरूपित करने के लिए उसने कई दृष्टान्त भी दिये। सोमप्रभा की माँ ने सन्तुष्ट होकर उससे कहा—"बेटा, ठीक एक सप्ताह बाद अच्छा मुहूर्त है। यदि तुम उस दिन हमारे घर आये तो मैं तुम्हारे साथ अपनी लड़की की शादी कर दूँगी।"

इस तरह हरिस्वामी, देवस्वामी और उसकी माँ ने एक दूसरे के बिना जाने तीन वरों की व्यवस्था की।

हरिस्वामी के घर आते ही यह कहने पर कि उसने एक को विवाह के बारे में वचन दे दिया था, तो बाकी दोनों ने कहा कि वे भी वचन दे चुके थे। वे सोचने लगे कि अब इस उलझन को कैसे सुलझाया जाय।

एक सप्ताह हो गया। मुहूर्त का दिन आया। तीनों वर हरिस्वामी के घर आये। वे अभी सोच ही रहे थे कि कैसे इस समस्या का परिष्कार हो कि सोमप्रभा कहीं गायब हो गई। बहुत खोजा पर कहीं उसका पता न लगा।

तब वरों में ज्ञानी वर से हरिस्वामी ने पूछा—"तुम यदि सचमुच ज्ञानी हो तो बताओ कि मेरी लड़की कहाँ है?"

"विन्ध्यारण्य में धूमशिखा नामक राक्षस आपकी लड़की को उड़ा ले गया है। वह इस समय उसके घर है।" ज्ञानी ने कहा।

"अरे भाई, कहाँ विन्ध्यारण्य है! कैसे वहाँ पहुँचा जाय! अगर पहुँच भी गये तो कैसे उसको राक्षस के चुंगल से छुड़ाया जाय! अगर छुड़ा भी लिया तो कैसे उसका विवाह किया जाय!" हरिस्वामी रोने लगा।

"आप फिक्र न कीजिए। हम सब एक क्षण में आपकी लड़की के पास जा सकते हैं, मेरा विमान जो है।" महा वैज्ञानिक ने कहा।

उसके विमान में सब चढ़ गये। समस्त शस्त्रों में निपुण शूर भी उनके साथ विमान में सवार हुआ। क्षण में विमान विन्ध्यारण्य में पहुँचकर, धूमशिखा के घर के ऊपर मँडराने लगा। सब विमान से उतरे।

धूमशिखा ने क्रुद्ध हो, उन पर आक्रमण किया। शूर ने अपनी अस्त्रों की निपुणता प्रदर्शित की। उसने राक्षस से लड़कर उसका सिर अर्धचन्द्र बाण से काट दिया। फिर सब मिलकर सोमप्रभा को लेकर,

विमान में हरिस्वामी के घर वापिस पहुँचे। सुमुहूर्त समीप आ रहा था। पर सोमप्रभा से विवाह करने के लिए तीन वर तैयार थे, हरेक उससे शादी करना चाहता था।

"अगर मैं नहीं बताता कि सोमप्रभा कहाँ है, तो तुम्हें कैसे मालूम होता और वह तुम्हें कैसे मिलती! मैं ही उससे शादी कर सकता हूँ।" ज्ञानी ने कहा।

"भले ही वह कहीं हो, यदि मेरा विमान न होता, तो तुम उसे बचा कैसे पाते! मैं ही उससे शादी कर सकता हूँ।" वैज्ञानिक ने कहा।

"राक्षस को मारकर जब मैंने उसकी रक्षा की है, तो उससे भला और कौन शादी कर सकता है!" शूर ने कहा।

हरिस्वामी न जान सका कि इन तीनों में किसकी युक्ति ठीक थी।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजा, उन तीनों दुल्हाओं में सोमप्रभा से विवाह करने के लिए कौन अधिक योग्य था। शूर या ज्ञानी या वैज्ञानिक! इस प्रश्न का यदि तुमने जान-बूझकर उत्तर न दिया, तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।"

विक्रमार्क ने कहा—"सोमप्रभा से विवाह करने योग्य, सच कहा जाय, तो शूर ही है। उसने ही अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर राक्षस से युद्ध किया था। ज्ञानी और वैज्ञानिक ने केवल उसकी सहायता ही की थी। ज्ञान और विज्ञान साधन ही हो सकते हैं, उद्देश्य कभी नहीं हो सकते!"

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और वृक्ष पर जाकर बैठ गया।

मुजो के लिए

टर्की में मुजो नाम का एक आदमी था। क्योंकि वह छुटपन में ही मर गया था उसकी पत्नी ने फिर शादी कर ली। उसका दूसरा पति कुछ पैसेवाला किसान था। दोनों पति-पत्नी स्वयं खेती किया करते। वे एक दिन कड़ी दुपहरी में अपने जौ के खेत में काम करते रहे। पति ने पीठ सीधी करते हुए कहा—"मैंने कहा, आओ, खाना खायें। मैं घोड़े को नाले में पानी पिला लाता हूँ, तब तक तुम टीले पर, पेड़ के नीचे आराम करो।

पत्नी पेड़ के नीचे गई। लेटकर उसने कहा—"बाप रे बाप" उसने आँखें मूँद लीं। इतने में उसको सुनाई दिया "क्यों कौन है?" उसने आँखें खोलीं तो विचित्र कपड़े पहिने, बालोंवाली टोपी लगाये एक आदमी सामने दिखाई दिया।

"कौन हो तुम, कहाँ से आ रहे हो?" स्त्री ने पूछा।

"हम इस दुनियाँ के नहीं हैं।" आदमी ने कहा।

"तो किसी और दुनियाँ से आये हो! तो क्या वहाँ मेरा पहिला पति मुजो दिखाई दिया था? उसको गुज़रे बहुत समय नहीं हुआ है।" स्त्री ने कहा।

"मुजो क्यों नहीं मालूम? रोज मिलते हैं। हम दोनों अच्छे दोस्त हैं। यही नहीं, हम दोनों के घर भी पास पास हैं।" नये आदमी ने कहा।

"सच! क्या वहाँ सब आराम हैं!" स्त्री न पूछा।

"जैसे यहाँ हैं, वैसे ही वहाँ हैं! हाँ, हाँ, करीब करीब ऐसे ही।" नये आदमी ने कहा।

मैत्रेयी

"तो मुजो क्या मज़े में है?" स्त्री ने फिर पूछा।

"आराम से तो है! पर पैसे के लिए कभी कभी तंगी बनी रहती है। कभी चाय पीने की इच्छा हुई या बीड़ी पीने की, तो पास दमड़ी भी न होती, अगर हम जैसा कोई मित्र दिला भी देता है तो लेने में आनाकानी करता है।" नये आदमी ने कहा।

स्त्री ने आँसू बहाये। आँचल से आँसू पोंछते हुए पूछा—"क्या तुम फिर वापिस जा रहे हो? पैसा दूँगी, क्या मुजो को दे दोगे?"

"ज़रूर, ख़ुशी ख़ुशी। यह भी कोई बड़ा काम है!" नये आदमी ने कहा।

स्त्री उठी और बगल में रखे पति के कोट में से उसने सोने के सिक्कों की थैली लेकर नये आदमी को देते हुए कहा—"यह हमारे मुजो को दे देना। कहना कि जब तक मैं जीवित हूँ मैं उसे किसी प्रकार की तंगी न होने दूँगी। कहना कि यद्यपि मैंने दूसरी शादी कर ली है, पर मुजो को नहीं भूली हूँ।"

नया आदमी जल्दी वह रुपया लेकर जितनी जल्दी उससे हो सका, नाले के पास के झुरमुट में छुप गया क्योंकि उसने उस स्त्री के दूसरे पति को घोड़ा लेकर आते देख लिया था। स्त्री नये आदमी को ही देखती रही। उसने अपने पति को जब तक वह पास नहीं आ गया, देखा नहीं।

"कौन है वह आदमी?" पति ने पूछा।

पत्नी ने जो कुछ हुआ था, बताया। किसान को बड़ा गुस्सा आया। यदि वह पत्नी को डाँटता ही खड़ा रहता, तो चोर जिसने थैली ली थी, चम्पत हो जाता।

"कहाँ है वह? वह किस तरफ़ गया है?" पति, पत्नी से सब कुछ मालूम करके घोड़े पर से सवार हो, उसे भगाता, जिस

तरफ़ नया आदमी भागा था, गया। नाले के कुछ ऊपर एक पनचक्की थी। नया आदमी जब वहाँ तक पहुँचा, तो उसको किसान के घोड़े के आने की आहट सुनाई दी। वह पनचक्की में घुस गया। अन्दर चक्की का शोर अधिक था। उसने पनचक्की के मालिक से कहा—"भाग जाओ, भाग जाओ, तुम्हें मारने के लिए तुर्की आ रहा है।"

जब मालिक ने बाहर झाँका, तो उसने देखा कि किसान हाथ में छुरी लिये, घोड़ा भगाता आ रहा था। उसने सोचा—"अब तो मरा" उसने अपनी टोपी नये आदमी को दी। उसकी बालोंवाली टोपी खुद लेली। उसने गले में और कमरे में जो कपड़ा बाँध रखा था, उसे भी उसे दे दिया। वह पिछवाड़े में से, चक्की के पीछे के टीले में से होता जंगल में भाग गया।

उसी समय तुर्की अन्दर आया। नये आदमी ने आटे के बोरे से थोड़ा आटा लिया और अपने हाथ, मुँह वगैरह, पर लगा लिया, ताकि ऐसा मालूम हो, जैसे वह कुछ निरीक्षण कर रहा हो।

किसान ने उसको न पहिचाना। "इस तरफ़ जो आया था, वह कहाँ है?"

वह जोर से चिल्लाया, परन्तु नये आदमी ने ऐसा दिखाया, जैसे कि शोर में कुछ सुन ही न पाया हो। किसान ने उसे झक झोरते हुए पूछा—"मैंने एक आदमी को अन्दर आते देखा है। कहाँ है वह?"

नया आदमी पिछवाड़े का दरवाज़ा दिखाकर फिर काम में लग गया। किसान जब पिछवाड़े के दरवाज़े के पास गया, तो पेड़ों के बीच में, टीले पर चढ़ते, बालों वाली टोपी पहिने वह आदमी दिखाई दिया। उन पेड़ों के बीच में से घोड़ा नहीं जा सकता था। किसान चिल्लाया—

"ठहरो, तुम्हारी जान ले लूँगा।" छुरी घुमाता हाँफता वह टीले पर चढ़ने लगा। यह सुन मालिक और जोर से भागने लगा। उस भग दौड़ में उसका पैर एक उखड़े पेड़ से टकराया, नीचे गिर गया। इससे पहिले कि वह उठ पाया किसान ने उसको पकड़ लिया।

"कहाँ है मेरी पैसों की थैली। अगर तुरन्त तुमने न दिया, तो तुमको काटकर रख दूँगा।" किसान ने कहा।

"कौन-सी पैसों की थैली?" मालिक ने घबराकर पूछा।

"वह थैली, जो तुम मेरी पत्नी को चकमा देकर, यह कहकर कि तुम मुजो को दोगे, उठा लाये थे, तुरत दो। अगर इधर उधर की बातें कीं तो मैं अच्छा नहीं हूँ।" किसान ने कहा।

"तुम्हारी पत्नी कौन है? मुजो कौन है? मैं कुछ नहीं जानता। जब तक उसने आकर मुझे डराया नहीं था, मैं चक्की में ही था।" चक्की के मालिक ने कहा।

धीमे धीमे सच मालूम हो गया। किसान पछताता, पछताता जब वापिस पन चक्की में आया, तो उसने देखा कि बाहर घोड़ा न था और अन्दर वह आदमी न था। वह नौ दो ग्यारह हो चुका था। वह पैर घसीटता घसीटता पत्नी के पास गया।

"खाना वाना खाये बगैर, बिना कुछ लिए दिये कहाँ चले गये थे? हाँ तो घोड़ा कहाँ है? पैदल क्यों आये?" पत्नी ने पूछा।

"घोड़ा? बिचारा मुजो स्वर्ग में चल चलकर पैर घिस रहा है। इसलिए मैंने उस आदमी को अपना घोड़ा भी दे दिया है, ताकि वह उसे उसके पास पहुँचा दे।" कहता किसान भोजन के लिए बैठ गया। क्योंकि दोनों खूब भूखे थे, भोजन बड़ा भाया।

सोने के कलश

एक जमीन्दार के गाँव में एक बड़ा गरीब रहा करता था। उसका दारिद्र्य देखकर, जमीन्दार ने थोड़ी-सी बँजर भूमि देकर कहा—"जब तक तुम जीओ, इसमें खेती बाड़ी करके खाओ पीओ।" एक बार जब वह खेत में हल चला रहा था, तो उस को कुछ लगा, जब खोद-खादकर देखा तो वहाँ जुड़वें कलश थे और उनमें सोना भरा पड़ा था।

अगर मैं इनको बिना किसी को दिखाये घर ले गया तो मेरी गरीबी जाती रहेगी। अगर इनके बारे में किसी को कुछ मालूम हुआ, तो मुझे एक पैसा न मिलेगा, सब जमीन्दार ही खोस लेगा। उसने सोचा।

वे कलश बड़े भारी थे। उन्हें अकेला घर पहुँचाना असम्भव था। पत्नी की सहायता की भी आवश्यकता थी। परन्तु उसके पेट में कोई बात न पचती थी।

किसान थोड़ी देर सोचता रहा, फिर उसने जो कुछ करना था, निश्चय कर लिया। अन्धेरा होते ही उसने कुछ मछलियाँ और मुरगी खरीदीं। मछलियों को उसने रस्सियों के फन्दों में डाल दिया। मुरगी को ले जाकर तालाब में डाले गये जालों में रख आया।

"हमेशा खाली हाथ घुमाते घुमाते आते हो! क्या पकाऊँ?" पत्नी चिढ़ चिढ़ाई।

"यूँ ही तुम न चिल्लाओ। आँगन में मैंने फन्दे लगा रखे हैं, देखें कुछ फँसा है कि नहीं। तालाब में जाल डालकर आया हूँ। हो सकता है कि उसमें भी कुछ फँसा हो।" किसान ने कहा। दोनों निकले। फन्दे में मछलियाँ दिखाई दीं

और जाल में मुरगी। "कितना आश्चर्य है, कितना आश्चर्य है।" पत्नी ने कहा।

"यह भी क्या आश्चर्य है। इससे भी बड़ी आश्चर्य की बात बताता हूँ। सुनो। हमारी जमीन में, जुड़वें कलश मिले हैं। रात को हम उनको ले आयेंगे। मगर देखना कि इस बारे में किसी को कुछ न मालूम हो। अगर मालूम हो गया तो हमें उन कलशों का सोना न मिल सकेगा। सम्भलकर रहना।" किसान ने कहा।

दोनों अन्धेरे में खेत गये। वहाँ उसने एक जगह लाल पानी और छोटी-सी टहनी रख रखी थी। टहनी लाल पानी में भिगोकर, पत्नी पर छिड़की।

"अरे, बारिश हो रही है!" पत्नी ने सिर उठाकर देखा। कहीं उसे बादल का टुकड़ा तक न दिखाई दिया। "बिना बादल के यह बारिश कैसी!" किसान की पत्नी ने पूछा।

"बिना बादल की बारिश खून की बारिश होती है। क्या तुम नहीं जानती!" किसान ने पूछा।

फिर ये दोनों जुड़े हुए कलश उठाकर घर की ओर गये। जब वे जमीन्दार के घर के पिछवाड़े में गये तो, गौवें रम्भाईं। "यह क्या है!" किसान की पत्नी ने भयवश पूछा।

"कुछ नहीं, ज़मीन्दार साहब को भूत उठाकर ले गये हैं। इसलिए नौकर रो रहे हैं।" किसान ने कहा।

"हाँ, तो ऐसी बात है!" किसान की पत्नी ने फिर आश्चर्य से पूछा।

पति-पत्नी बिना किसी विघ्न के घर पहुँचे। उन्होंने उनको एक जगह गाड़ दिया। क्योंकि पत्नी थक गयी थी, इसलिए तुरत सो गई। केवल किसान जागता

रहा। उसने फिर जुड़वें कलश उखाड़े। उसने सोना एक जगह गाड़ दिया और कलश दूसरी जगह। फिर वह भी सो गया।

सवेरा होते ही पत्नी ने किसान से कहा—"क्या तुम मुझे थोड़े सिक्के दे सकोगे? दो-चार साड़ियाँ, और गहने खरीद लूँगी।"

"अरे पगली, अगर हम यूँही सोना बिखेरते रहे तो सबको हमारा रहस्य मालूम नहीं हो जायेगा?" किसान ने पूछा।

दोनों में फिर तू तू मैं मैं हुई। वे लड़े। पड़ोसिन के दीखते ही किसान की पत्नी ने कहा—"मालूम है मेरा पति कितना कँजूस है?"

"क्यों?" पड़ोसिन ने पूछा।

"कभी किसी और से न कहना। हमें खेत में जुड़वें कलश मिले। उसमें सोनेके सिक्के भरे पड़े थे। मैंने कहा कि मैं साड़ी खरीदूँगी। तुम्हारी कसम, उन्होंने मुझे एक सिक्का तक न दिया।" किसान की पत्नी ने कहा।

रात होते होते जुड़वे कलशों के बारे में बहुत-से लोगों को मालूम हो गया। दो तीन दिन में यह बात जमीन्दार तक भी पहुँची। वह क्रुद्ध हुआ। किसान के

घर आकर उसने कहा—"दुष्ट कहीं का। नमकहराम। दया करके तुम्हें खेतीबाड़ी के लिए जमीन दी और तुम उस जमीन में मिले कलशों को अपने घर रखते हो? क्या वह तुम्हारे बाप की दौलत है?"

किसान यद्यपि अन्दर ही अन्दर काँप रहा था पर बाहर बिना झिझके उसने कहा—"जुड़वे कलश! मैं तो कुछ भी नहीं जानता। आपको किसने बताया है?"

"सुनता हूँ कि तुम और तुम्हारी पत्नी उन कलशों को उठाकर लाये हैं। गाँव में सब को उसने खुद ही बताया है।" जमीन्दार ने कहा।

किसान ने पत्नी की ओर तरेरा। उस ने पति से पूछा—"यों क्या देख रहे हो? क्या तू और मैं खेत से जुड़वे कलश उठाकर नहीं लाये थे? क्या उनमें सोने के सिक्के नहीं भरे थे?"

"कब?" किसान ने आश्चर्य दिखाते हुए पूछा।

"क्या तुम सोच रहे हो कि मैं भूल गई हूँ। उसी दिन ही तो फन्दे में मछलियाँ पड़ी थीं। तालाब के जाल में मुरगी मिली थी?" पत्नी ने पूछा। चारों ओर जमा हुए लोग उसकी ऊँटपटाँग बातों पर हँसने लगे।

"क्यों हँस रहे हो? उस दिन रात को ही तो बिना बादल के खून बरसा था और जब जमीन्दार को भूत उठा ले गये थे, तो नौकर यकायक जोर से रो उठे थे।" किसान की पत्नी ने कहा।

"छी, पगली कहीं की।" जमीन्दार डाँटता धमकाता बाहर चला गया। वह जान गया कि सोने की कलशों की बात भी महज़ अफ़वाह थी। जो कोई भी आया, उसने किसान की पत्नी की एक बात पर भी विश्वास न किया।

नया दामाद

बाबा पेट भर खाना खाकर चान्दनी में, आराम कुर्सी पर बैठा था। उसने सुंघनी सूंघकर कहा :

> "आहारे व्यवहारे च
> त्यक्तलज्जः सुखीभवेत्;
> अन्यथास्यात् परीभवी
> दुःखभाक च नरसंशयः।"

बाबा ने यह श्लोक पढ़ा।

"हम इसका अर्थ नहीं जानते बाबा। क्या अर्थ है!" बच्चों ने एक साथ पूछा।

"इस श्लोक का अर्थ है भोजन और व्यवहार आदि में शर्माने से कोई फ़ायदा नहीं। जो कोई शर्माता है, उसे अवश्य अपमान और कष्ट सहने होते हैं।" बाबा ने बताया।

"खाने पीने में मैं बिल्कुल नहीं शर्माता। आज अरहर की चटनी बड़ी अच्छी थी। इसलिए मैं सारा भोजन उसी के साथ खा गया।" एक लड़के ने कहा।

"अरे ठहर भी! बाबा, तुम बताओ।" एक और ने कहा।

"सुनाता हूँ, सुनो।" बाबा ने यों कहानी सुनानी शुरु की।

एक गाँव में सुन्दरेश नाम का एक लड़का था। वह बड़ा शर्मीला था। सुना! उसकी शादी हुई। फिर क्या था! ससुरालवाले उसको घर ले गये। ससुराल में तो सभी नये ही थे। सुन्दरेश परिचितों के सामने ही शर्मीला था। अपरिचितों के सामने तो क्या बातें करता! वह किसी से न मिलता, खोया खोया-सा अलग घूमता रहता।

ससुराल में दामाद के लिए तरह तरह के पकवान बनाये गये और सुन्दरेश इस

बुरी तरह शर्माया हुआ था कि कुछ न खा पाया। वह मना करता रहा, पर वे परोसते रहे। जो परोसा गया था, उसे छूते भी वह शर्माया।

जानते हो एक बार क्या हुआ! सास सब को तिल का चूरा परोस रही थी। सुन्दरेश को भी परोसना चाहा। सुन्दरेश ने हाथ आगे रखकर पूछा—"नहीं, नहीं।"

"यह क्या बेटा! कम से कम विधि के लिए तो खाओ।" सास ने थोड़ा-सा परोसा।

सुन्दरेश तिल के चूरे का स्वाद नहीं जानता था। यह जानने के लिए कि उसका स्वाद कैसा था, उसने पत्तल पर रखा चूरा मुख में लगाया। उसका स्वाद बड़ा मजेदार था।

"अरे वाह, थोड़ा और परोसने के लिए क्यों नहीं कहा!" उसने मन ही मन सोचा। मुख खोलकर पूछने में उसे शर्म आ रही थी।

भोजन के बाद सब सो गये। सुन्दरेश सारा घर छानता रहा....यह देखने के लिए तिल का चूरा कहाँ था। चुटकी भर चूरा मुख में डालने के लिए वह तरस रहा था।

ढूँढ़ता ढूँढ़ता जब वह आँगन में ओखल के पास गया, तो उसे तिल के चूरे की सुगन्ध आई। उसी ओखल में वह चूरा बनाया गया था। फिर क्या था। सुन्दरेश ओखल में सिर देकर ओखल चाटने लगा। उसका सिर ओखल में फँस गया। बहुत कोशिश की पर वह बाहर न निकला।

फिर सब जमा हुए। कुछ भी हो, नये दामाद का सिर ओखल से निकाला। पर असली बात तो यह है कि जो थोड़ा-सा तिल का चूरा माँगने के लिए शर्मा रहा था, उसको सबके सामने अपमानित होना पड़ा।

[२]

अगले दिन जब राजा आकाश महल में पहुँचा तो उसने देखा कि रात वहाँ फिर कोई आया था। यह भी साफ़ था कि उसके योद्धा उसको पकड़ न पाये थे। राजा को इतना गुस्सा आया कि उसके मुख से बात तक न निकली।

इस बीच यह बात सारे शहर में फैल गई। "भाई, सुना! आकाश महल में राजा ने जिस राजकुमारी को रखा था, उसके पास कोई नियमित रूप से आ जा रहा है। कितनी बदनामी होगी।" शहर में लोग यह एक दूसरे से कहने लगे। राजा गली में अपना मुँह तक न दिखा सका।

उसने अपने मन्त्रियों में से एक चुस्त मन्त्री को बुलाकर कहा—"जो दुष्ट लड़की के पास आ जा रहा है, उसको पकड़ने का कोई उपाय सोचो।"

महाराज, आकाश महल में और वहाँ की हर सामग्री पर रंग छिड़काइये। यदि वहाँ आकर कोई एक क्षण भी बैठा, तो उसको रंग लग जायेगा। फिर नगर में हम किसी न किसी तरह उसको ढूँढ निकालेंगे" मन्त्री ने राजा को यह उपाय सुझाया।

राजकुमार जिस नगर में उतरा था, उसमें एक गरीब बूढ़ा रहा करता था। वह रोज तड़के उठ जाता और औरों को सवेरे की प्रार्थना के लिए उठाता। वह गलियों में घूम रहा था कि उसने ऊपर से कपड़े गिरते देखे। उन्हें बहुत कीमती पा वह बड़ा खुश हुआ।

"हो न हो, भगवान ने ही ये वस्त्र मेरे लिये गिराये हैं। जब से होश सम्भाला है, तब से उस भगवान की उपासना में ही तो मैंने जीवन व्यतीत किया है। इसलिए ही उनकी अब मुझ पर कृपा हुई है।" वृद्ध ने सोचा। वह उनको लेकर घर चला गया।

रोज शाम के समय नगर के लोग मन्दिर में आते। गरीब बूढ़ा क्या जानता था कि उस पर क्या बीतने जा रही थी। वह उन्हीं कपड़ों को पहिन कर औरों की तरह मन्दिर में गया।

यह उपाय राजा को पसन्द आया। उस दिन शाम को वह आकाश महल में गया। वहाँ की कुर्सियों और पलंगों पर उसने रंग छिड़का। हमेशा की तरह राजकुमार उस दिन रात को भी आकाश महल में गया। राजकुमारी के साथ उसने सारी रात बिताई। जब सवेरे काठ के घोड़े पर वह उतर रहा था, तो उसने देखा कि उसके कपड़ों पर रंग पड़ा था। तुरत उसने कपड़े उतारकर नीचे फेंक दिये—यद्यपि उन कपड़ों में मोती वगैरह सीये गये थे। पर उसने परवाह न की।

वहाँ राज सैनिक यह देख रहे थे कि किसके कपड़ों पर वह रंग लगा था। उनकी नजर इस बूढ़े पर पड़ी। वह प्रार्थना कर रहा था। वे उसके कपड़ों पर रंग देखकर, उसको प्रार्थना करता उठाकर

राजा के पास ले गये। बूढ़े और उसके कपड़ों पर पड़े रंग को देखते ही राजा खौल उठा। उसने बूढ़े से पूछा—"तुम्हारे कपड़ों को यह रंग कैसे लगा?"

"महाराज! जब ये मुझे गली में मिले थे तभी उनपर यह रंग लगा था।" बूढ़े ने कहा।

राजा ने उसकी बात पर विश्वास न किया और उसको जेल में डलवा दिया। वहाँ कर्मचारियों ने उसे खूब सताया और जबर्दस्ती उससे कबूल करवाया कि उसने गल्ती की थी। फिर उसके हाथ में हथकड़ियाँ डालकर उसे फाँसी पर चढ़ाने ले गये।

इस "अपराधी" को देखने के लिए लोग हजारों ही संख्या में जमा हुए। नगर में तब तक सब को मालूम हो ही चुका था कि कोई राजकुमारी के पास लुका छुपा जा रहा था। अब यह सब को पता लग गया कि वह आदमी अब पकड़ा गया था।

लोग यह जानने के लिए उतावले हो रहे थे कि परम सुन्दर राजकुमारी को किसने मुग्ध कर लिया था। जब अपराधी को देखा तो वह बूढ़ा निकला। उसे सब जानते थे, लोगों को विश्वास न हुआ कि वह बूढ़ा रोज आकाश महल में जाकर वहाँ रात बिता रहा था। उनको ऐसा लगा कि उसको फाँसी पर चढ़ाना हत्या के बराबर था।

राजकुमार के कानों में भी यह बात पड़ी कि राजकुमारी का प्रेमी पकड़ा गया था और उसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, और उसको फाँसी दी जा रही थी। वह, लकड़ी के घोड़े को बगल में रखकर उस जगह गया, जहाँ फाँसी दी जा रही थी।

बताइये कि किसको फाँसी दी जाये। कह रहा है बूढ़े को न मारो।"

"जिस युवक ने अपराध स्वीकार किया है, उसी को फाँसी पर चढ़ाओ।" राजा ने कहा। उसको भी लगा कि जब युवक ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, तब बूढ़ा निर्दोषी ही होगा।

राजा की अनुमति मिलते ही कोतवाल ने बूढ़े के गले में लगी रस्सी निकाल दी। फिर उसने सैनिकों को राजकुमार को पकड़ने की आज्ञा दी।

जब वह वहाँ पहुँचा तो बूढ़े के गले में रस्सी भी डाल दी गई थी। "उसे फाँसी पर न चढ़ावो वह निरपराधी है। आकाश महल में राजकुमारी के साथ रहनेवाला मैं हूँ। गरीब ने जो कपड़े पहिन रखे हैं, वे मेरे हैं। चाहो, तो मुझे मार दो। परन्तु उसे तुरन्त छोड़ दो। मैं कहता हूँ उसे छोड़ दो।" राजकुमार चिल्लाया।

कोतवाल ने फाँसी रोक दी। राजा के पास एक आदमी भेजा। उस आदमी ने राजा से कहा—"महाराज, एक युवक आकर अपने को दोषी बता रहा है।

वे अभी उसके पास न आये थे कि राजकुमार ने काठ का घोड़ा नीचे रखा, उस पर सवार हुआ और सबके देखते देखते वह आकाश में गया। राजा को, जो दूरी पर बैठा यह सब देख रहा था, इतना गुस्सा आया कि वह बेहोश गिर गया।

राजकुमार सीधे आकाश महल में गया। वहाँ राजकुमारी से मिला। "लगता है, हमारा प्रेम मौत का कारण बन रहा है। मैं तुम्हारे बगैर नहीं रह सकता और तुम मेरे बगैर नहीं रह सकते और यूँहि हम दोनों का रहस्य तुम्हारे पिता को मालूम हो गया है। वे यहाँ भी नगर में मेरा

पीछा करेंगे। इस आपत्ति से बचने का बस एक ही मार्ग है। तुम भी मेरे साथ मेरे देश चले आओ। हमारे लोग तुम्हें देखकर ज़रूर सन्तुष्ट होंगे।"

"मैंने पहिले ही निश्चय कर लिया है कि मैं तुम्हें न छोड़ूँगी। तुम जहाँ भी जाओगे, मैं तुम्हारे साथ आऊँगी। तुम इस बारे में अन्यथा सोचो ही न।" राजकुमारी ने कहा।

दोनों आकाश महल से बाहर आये। काठ के घोड़े पर सवार हो आकाश मार्ग से यात्रा करने लगे।

जब वे कई नदी पहाड़, जंगल पार कर रेगिस्तान में से आ रहे थे, तो राजकुमारी ने कहा—"बड़ी गल्ती हुई, हमें फिर वापिस जाना होगा।"

"क्यों!" राजकुमार ने पूछा।

"छुटपन में मेरी माँ ने मुझे दो आभूषण दिये थे। उसने कहा था कि मैं जब बड़ी होकर विवाह करूँ, तब उनको ससुर-सास को उपहार में दूँ। मैं जल्दी में उनको भूल गई। मैं उनको बिना लिये कैसे तुम्हारे शहर आऊँ!" राजकुमारी ने पूछा।

"यही बात थी बस! अगर वे आभूषण नहीं हैं, तो कोई बात नहीं, हम बहुत दूर चले आये हैं।" राजकुमार ने कहा।

"नहीं, नहीं, मैं उनको बिना लिये नहीं आऊँगी। अगर विवाह के अवसर पर सास-ससुर को मैं ये आभूषण न दे सकी, तो ज़िन्दगी-भर मैं शर्मिन्दा रहूँगी।" राजकुमारी ने कहा।

क्योंकि वह उसको कष्ट न देना चाहता था, इसलिए कीलें कसकर उसने घोड़े को नीचे उतारा। उसने उससे कहा—"मैं तुम्हारी यहीं प्रतीक्षा करता रहूँगा। तुम घोड़े पर जाओ और उन आभूषणों को लेकर यहाँ चले आना।" राजकुमारी ने कहा।

राजकुमारी उस काठ के घोड़े पर सवार होकर जिस रास्ते आई थी, उसी रास्ते वापिस आकाश महल में चली गई।

इस बीच राजा की सेवा शुश्रुषा करके मन्त्री उसे होश में लाये। होश आते ही उसको राजकुमारी याद हो आई। वह हड़बड़ाता आकाश महल में पहुँचा। पर तब तक तो चिड़िया उड़ चुकी थी। महल खाली पिंजड़े के समान था।

वह यह सोच-सोच कि क्या किया जाय, पगलाया हुआ-सा था कि इतने में उसने आकाश में राजकुमारी को देखा।

वह आभूषणों के लिए काठ के घोड़े पर अकेली वापिस आ रही थी। राजा एक पलंग के पीछे छुप गया। राजकुमारी के अन्दर पैर रखते ही, वह सामने आया और उसको पकड़कर आकाश महल से अपने महल में ले गया।

राजा जो अब तक राजकुमारी के विवाह के बारे में तटस्थ-सा था, अब उसकी शादी करने के लिए उतावला हो

रहा था। पर उससे कौन शादी करेगा! उसकी बदनामी आसपास सब जगह हो गई होगी। उस प्रान्त के अच्छे खानदान वाले, भले ही ढेर-स धन दिया जाये, उससे शादी न करेंगे।

दूर देश के राजा का एक लड़का था। इस राजा ने कभी राजकुमारी के सौन्दर्य के बारे में सुनकर, खबर भी भिजवाई थी—"क्या आप मेरे लड़के से अपनी लड़की की शादी करेंगे!"

तब यह राजा, अपनी लड़की का विवाह करने के लिए चिन्तित न था। उसने कहला भेजा "अभी हमारी लड़की की शादी की उम्र नहीं हुई है। इसलिए अभी हम उसकी शादी नहीं करना चाहते।"

राजा को अब वह बात याद आई। उसने सोचा कि मेरी लड़की की बदनामी उतनी दूर न गई होगी। अगर मैंने कहला भेजा कि मैं इस शादी के लिए तैयार हूँ, तो वे भागे-भागे आयेंगे।

इसलिए राजा ने दूर देश के राजा के पास यह खबर भिजवाई—"आपने कभी कहलाया था कि आप अपने लड़के की शादी हमारी लड़की के साथ करना चाहते हैं। क्योंकि तब हमारी लड़की की आयु, विवाह योग्य न थी, इसलिए हमने इसके लिए इनकार कर दिया था। अब हमारी लड़की विवाह के योग्य हो गई है। अगर आप अपना लड़का भेजेंगे तो हम विवाह करके भेज देंगे। इस विवाह के कारण हम बन्धु हो जायेंगे और हमारे दोनों देशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध और भी दृढ़ हो जायेंगे।"

[अभी और है]

काज़ी और पाजी

एक सुल्तान ने एक काज़ी को एक बड़ा खिताब देने के लिए बुलाया। सुल्तान ने कहा—

"मैं तुम्हें एक बड़ा खिताब देना चाहता हूँ। परन्तु यह जानने लिए कि तुम इस खिताब के लायक हो कि नहीं तीन सवाल करूँगा। तुम्हें उनके जवाब देने होंगे और वे तीन सवाल ये हैं।

"खुदा के रहने की जगह कहाँ है? वह किस दिशा की ओर देखता रहता है? वह क्या करता रहता है? यदि तुमने इन तीन सवालों के ठीक जवाब दिये तो मैं तुमको एक बड़ी नौकरी दूँगा। अगर जवाब ठीक न दिये तो सख्त सज़ा दूँगा।" सुल्तान ने कहा।

आसान सवाल तो सुल्तान करेंगे नहीं, इसलिए काज़ी एक सप्ताह का वक्त माँगकर घर चला आया। दिन रात वह सोचता रहा, पर कोई जवाब न मिला।

एक हफ्ताह भी जल्दी हरिण हो गया। काज़ी ने अपने नौकर पाजी को बुलाकर कहा—"अरे, ज़रा सुल्तान से कह आओ कि मैं बीमार हूँ, कुछ तन्दुरुस्त होने पर दरबार में हाज़िर होऊँगा।" काज़ी इस तरह अपना समय बढ़ाना चाहता था।

"आप यकायक बीमार हो कैसे गये?" पाजी ने पूछा।

काज़ी ज़रा खिझा। मगर पाजी भी अड़ा रहा और काज़ी को सब कुछ बताना पड़ा। उसने सब सुनकर कहा—"मैं इन प्रश्नों के उत्तर जानता हूँ। अगर आपने एक कागज़ पर लिखकर दिया तो मैं आपकी तरफ़ से सवालों का जवाब दे आऊँगा। अगर सुल्तान को ये जवाब न जँचे तो मेरा ही सिर कटेगा।"

रमाकान्त

काज़ी ने पाजी को सुल्तान के पास भेजा। सुल्तान ने काज़ी का लिखा पढ़ा। "जो सवाल मैंने काज़ी से किये थे, क्या तुम उनका जवाब दे सकोगे?" सुल्तान ने पूछा।

"हाँ, हुजूर। परन्तु जब मैं आपके सवालों का जवाब दूँगा, तब आपको मुझे गुरु मानना होगा और अपने को शिष्य।" पाजी ने कहा।

सुल्तान ने उसको अच्छे कपड़े दिये और अपने सिंहासन पर बैठकर जवाब देने के लिए कहा—"खुदा की रहने की जगह कहाँ है?" हम जानते हैं कि दूध में मक्खन होता है। परन्तु दूध के किस अंश में है वह? सारे दूध में होता है। खुदा किस तरफ़ देखता रहता है? जलाया हुआ दीया किस तरफ़ देखता है? सभी ओर देखता है। खुदा भी ऐसा ही है। वह चारों तरफ़ देखता रहता है। अब आखिरी सवाल है कि खुदा क्या करता रहता है? काजी को बुल्वाइये, मैं उस सवाल का भी जवाब दूँगा।" पाजी ने कहा।

पाजी के जवाब तभी सुल्तान को जँचने लगे थे। वह इस पर अचरज कर रहा था कि जब पाजी ही इतना अक़्लमन्द है तो काज़ी कितना अक़्लमन्द होगा। उसने काजी को बुल्वाया।

काज़ी ने आकर देखा कि पाजी सुल्तान के सिंहासन पर बैठा है, सुल्तान उस जगह बैठा था, जहाँ उसको बैठना चाहिए था। पाजी ने काजी को नौकरों के बैठने की जगह पर बैठने के लिए कहा। "खुदा का काम भी यही है। सुल्तान को काज़ी बना देता है और काजी को पाजी। और पाजी को सुल्तान बना देता है।"

सुल्तान यह सुन बड़ा सन्तुष्ट हुआ।

किसान की अर्ज़ी

एक गाँव में एक किसान रहा करता था। सिवाय एक गौ के उसके पास कुछ भी न था। उसे चराने के लिए भी उसे समय न मिलता। इसलिए वह बहुत कमजोर हो गई थी। वह गौ को घर के आँगन में ही रखता।

गरीब किसान के आँगन के साथ ही एक बड़े जमीन्दार का आहाता था। उसमें पशुओं के लिए घास काफ़ी बढ़ गई थी। गौ को भी उसकी सुगन्ध आई। उसने रस्सी तोड़ दी। दोनों घरों की बीच की बाड़ में से घुसकर जमीन्दार के आहाते में घुस गई और वहाँ घास चरने लगी।

यह देख जमीन्दार के एक नौकर ने आकर गौ के सिर पर मोटा-सा लट्ठ मारा। एक ही चोट लगी और गौ ठंडी हो गई।

किसान जमीन्दार के पास जाकर रोया धोया। उसने किसान की बात सुनी और अपने नौकर की भी। "एक तो अपनी गौ को दूसरों की जगह हाँक दो और तिस पर यह भी कहो कि अन्याय हुआ है। इसे घर के बाहर खम्भे से बाँध दो और मार पीटकर भेज दो।" जमीन्दार ने अपने नौकर से कहा।

किसान गौ तो खो ही बैठा था और खूब मार खाकर घर आया। उसने अपनी पत्नी को जो कुछ गुज़रा था, बताया।

"जमीन्दार ने यदि न्याय नहीं किया तो क्या बात यहीं खतम हो जायेगी? तुम जाकर सीधे राजा से फरियाद करो। राजा अन्याय न होने देंगे। न्याय करेंगे।" किसान की पत्नी ने कहा।

पर राजा से जो कुछ गुज़रा है, कैसे कहा जाय? अर्ज़ी तो तभी न लिख पाते, यदि वे पति पत्नी पढ़े लिखे होते। वे तो अपढ़ थे। इसलिए वे एक लकड़ी की

ए. निरुपम

तख्ती लाये और उस पर एक चित्र बनाया। उसमें उन्होंने अपना घर, जमीन्दार का घर, बीच की बाड़, बाड़ में छेद, वह जगह जहाँ जमीन्दार के नौकर ने गौ मारी थी, वह खम्भा, जहाँ उसको पीटा गया था— सब के निशान बनाये।

"वाह....यह देखते ही राजा सब कुछ आसानी से समझ जायेंगे। रास्ते में खाने के लिए रोटी बनाकर दूँगी। तुम राजधानी के लिए निकल पड़ो।" पत्नी ने कहा।

किसान निकल पड़ा और दुपहर तक वह एक वन में पहुँचा। वह राजा का वन था। उस वन में किसान को एक आदमी दिखाई दिया। वह आदमी राजा ही था। वह मामूली कपड़ों में था, किसान न जान सका कि वह राजा ही था।

"नमस्कार महाराज!" किसान ने कहा।

"जीते रहो, कौन हो तुम? कहाँ जा रहे हो?" राजा ने पूछा।

"और क्या है! राजा के पास फरियाद करने जा रहा हूँ। यह देखो अर्जी, मैंने अपने पीठ पर बाँध रखी है। मेरी गौ को यूँ ही मार जो दिया है। भूख लग रही है, जरा ये रोटी खाकर पूरा हाल बताऊँगा।" किसान ने कहा।

एक नाले के पास किसान और राजा बैठ गये। किसान ने अपनी रोटी और मक्खन में से आधा राजा को दिया। दोनों ने खाकर नाले में पानी पिया।

"कहाँ है तुम्हारी अर्जी?" राजा ने पूछा।

किसान ने काठ की तख्ती निकालकर कहा—"यह देखो हमारा घर है और यह घर जमीन्दार का है। यह बाड़ है। यहाँ रास्ता है, उस रास्ते से हमारी गौ उनकी जगह में चली गई और यहाँ

जमीन्दार के आदमी ने मोटे लट्ठ से हमारी गौ को मार दिया। जब मैंने जाकर जमीन्दार से शिकायत की कि मेरे साथ अन्याय हुआ था, तो उसने खम्मे से बाँधकर मुझे पिटवाया और कहा जा, चाहे जहाँ शिकायत कर।"

"फिर क्या है! इसको जिस तरह तुमने मुझे दिखाया है, उसी तरह राजा को भी दिखाना। ज़रूर वे न्याय करेंगे। अच्छा, तो मैं अब जाता हूँ।" यह कहकर राजा चला गया।

किसान अगले दिन अर्ज़ी की काठ की तख्ती लेकर राजा के दरबार में गया। राजा, मुकट व अन्य राजोचित चिह्न लगाकर ऊँचे सिंहासन पर बैठा था। उसकी बगल में बारह मन्त्री पंक्ति में बैठे थे।

किसान ने राजा को न पहिचाना। उसने अपनी अर्ज़ी को अन्त में बैठे मन्त्री को देते हुए कहा—"हुज़ूर, ज़रा इस अर्ज़ी पर गौर कीजिये। ज़मीन्दार के आदमी का मेरी गौ को पकड़ना और मुझे मारना, सब कुछ इसमें है। मेहरबानी करके ज़रा देखिये।"

मन्त्री ने उस तख्ती को देखकर कहा—"मुझे तो कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। यह भी क्या अर्ज़ी है!" कहते हुए उसने बगलवाले मन्त्री को वह सौंप दी।

उस मन्त्री ने भी तख्ती को गौर से देखा और कहा—"यह अर्ज़ी नहीं है। इस पगले को बाहर निकालो।"

इतने में राजा ने कहा—"उसे मेरे पास भेजो।" किसान की लाई हुई अर्ज़ी एक एक ने देखी, फिर सिर मोड़कर पासवाले मन्त्री को दे दी। आखिर वह काठ की तख्ती राजा के पास पहुँची। उसने उसको देखकर कहा—"यह तो साफ़ मालूम हो रहा है। तुम इधर

आओ।" राजा ने किसान को बुलाया। "यह तुम्हारा घर है और यह ज़मीन्दार का घर है, क्यों?" राजा ने पूछा।

"जी हुज़ूर।" किसान ने कहा।

"और यह बाड़ में रास्ता-सा है। इसी में से तुम्हारी गौ जमीन्दार के आँगन में गई थी?"

"जी हाँ।" किसान ने कहा।

"बाकी भी मालूम हो रहा है। ज़मीन्दार के आदमी तुम्हारी गौ को यहाँ मारा होगा और तुम्हें इस खम्भे से बाँध कर मारा गया होगा।" राजा ने कहा।

"आपने जो बात हुई थी, वह ठीक ठीक मालूम कर ली है।" किसान ने मन्द स्वर में कहा।

"अच्छा, तो तुम अपने घर वापिस चले जाओ। अपनी पत्नी से कहना कि न्याय करूँगा।" राजा ने कहा।

किसान ने राजा को नमस्कार किया। मन्त्रियों की ओर तरेरता हुआ वह घर चला गया।

उसी समय राजा के फैसले की खबर जमीन्दार के पास पहुँची। उसका फैसला था कि जमीन्दार किसान से माफ़ी माँगे। एक घर, पशुशाला बनवाकर दे। तीस सेन्ट भूमि दे और सात गौ भी दे।

"मैंने कहा था न कि राजा हमारे पक्ष में न्याय करेंगे।" किसान की पत्नी ने कहा।

"राजा के क्या कहने! वे कितने समझदार हैं। हमारी अर्ज़ी देखते ही वे सब कुछ समझ गये। पर उनके पास बारह आदमी थे। निरे मिट्टी के माधो थे। मुझे नहीं मालूम कि इतना सारा वेतन देकर वे उनको क्यों नौकरी पर रखे हुए हैं?" किसान ने आश्चर्य से कहा।

"जैसा मैंने कहा था, रात को आप खिड़की दरवाज़े खोलकर सोये कि नहीं? चलती हवा में तो आपका सिर दर्द काफ़ूर हो गया होगा?"

"सिर दर्द तो है—मेरी घड़ी और बटुवा चले गये हैं।"

"विश्वास कीजिए, मैंने जिन्दगी में जब कदम रखा, तो जेब में कौड़ी भी न थी।"

"और अब मैं पैदा हुआ, तो जेब भी न थी और क्या कहूँ!"

"क्यों भाई, कहते हो कि इस तेल के लगाने से बाल आ जायेंगे?"

"अरे वाह! आप भी क्या कह रहे हैं, गारन्टी है बाबू, आप को कहीं कंघी खोजनी न पड़े, इसलिए हर बोतल के साथ एक कंघी भी जो मुफ्त दे रहे हैं।"

"हाँ, तो आपको ठीक तरह दिखाई नहीं दे रहा है? आप उस बोर्ड में कितनी पंक्तियाँ पढ़ सकते हैं? पढ़िये।"

"पंक्तियाँ तो भगवान जाने, मगर बोर्ड है कहाँ?"

एस. शंकरनारायण, मद्रास

१. खेलसिंह पंजाबी, बिलासपुर

"चन्दामामा" क्या पंजाबी में प्रकाशित करेंगे?

जी, नहीं।

एक पाठक आपसे कितने प्रश्न पूछ सकता है?

चाहे जितने। पर वे ऊँटपटांग न हों।

२. नरेन्द्र प्रसाद, चाई बास

"चन्दामामा" का प्रकाशन पहले दस भाषाओं में होता था, परन्तु अब केवल छः भाषाओं में प्रकाशित होता है, क्यों?

क्योंकि और भाषाओं में इसके लोकप्रिय बनने में अधिक समय लगा था, और श्रम भी अधिक।

श्री शंकर और श्री चित्रा का चन्दामामा से क्या सम्बन्ध है?

वे "चन्दामामा" के चित्रकार वर्ग में हैं।

३. अनिलकुमार पशिने, सावनेर

क्या चन्दामामा (हिन्दी, तेलुगु, तमिल, कन्नड़, मराठी और गुजराती) इन भाषाओं में समान संख्या में प्रकाशित होता है, या कम ज्यादह?

स्वाभाविक है, कम ज्यादह,—हिन्दी में सब से अधिक छपता है।

हम जिस भाषा में प्रश्न भेजते हैं, वे उसी भाषा में छपते हैं या अन्य संस्करणों में भी?

उसी भाषा में ही।

४. मंशाराम, मानेगाँव

क्या आप उन्हीं पाठकों के प्रश्नों के उत्तर देते हैं जो "चन्दामामा" के वार्षिक ग्राहक हों ?

जी नहीं। जो कोई प्रश्न भेजता है, यदि प्रश्न उत्तर योग्य होता है, तो उत्तर दिया जाता है।

५. सुरेन्द्रकुमार, गाजियाबाद

क्या आप चन्दामामा के अलावा कोई पत्रिका नहीं छापते ?

अभी तो नहीं।

६. छोटेलाल रजक, हावड़ा

"चन्दामामा" में विज्ञापन छपाना चाहता हूँ—उपाय बतलाइये ?

विज्ञापन के व्यवस्थापक को लिखिये। पता वही है, जिस पते पर आपने यह प्रश्न भेजा है।

७. कु. सरला नायक, गाजीपुर

"चन्दामामा" में प्रकाशनार्थ भेजी जानेवाली कहानियाँ तथा कवितायें किस पते पर भेजनी चाहिये ?

उसी पते पर, जिस पते पर आपने यह प्रश्न भेजा है।

८. गुलजारी लाल, बम्बई

चन्दामामा में आप एक ऐसा स्तंभ क्यों नहीं निकालते, जिसमें पाठकगण अपनी चन्दामामा के प्रति राय व आलोचना आदि दें ?

"पाठकों का मत" नामक स्तंभ प्रकाशित करनेवाले हैं।

९. राजेन्द्रप्रसाद, वाराणसी

जो फोटो परिचयोक्ति में पुरस्कृत होते हैं, उन्हें १० रुपया नगद मिलता है या १० रुपये की कोई चीज़ ?

नगद।